मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

स्व. दीपचन्द नाहटा
श्रद्धांजलि सभा

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

www.samajvikas.in ▸ अक्टूबर २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक १०

उच्च शिक्षाकोष का श्री गणेश

सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा एवं उच्च शिक्षाकोष के अध्यक्ष पी. आर. अग्रवाल छात्रा प्रियंका खण्डेलवाल को चेक प्रदान करते हुए, पास में राष्ट्रीय महामंत्री राम अवतार पोद्दार व संयुक्त महामंत्री रविन्द्र कुमार लड़िया ।

श्री अग्रसेन जयन्ति

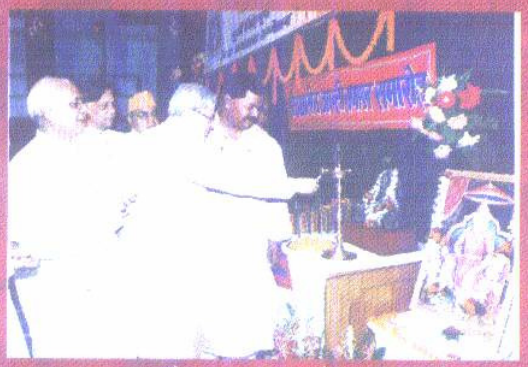

समापन समारोह का उदघाटन करते हुए झारखण्ड के उप मुख्यमंत्री सुधीर महेता, सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा, श्री मुरलीधर केडिया व रविन्द्र कुमार लड़िया

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी

मारवाड़ी समाज की धरोहर

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास
अक्टूबर 2007
वर्ष 57, अंक 10
एक प्रति – 10 रु.
वार्षिक – 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक ।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम ।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम ।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित ।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक ।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता ।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु ।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है ।

स्वात्वाधिकारी :
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-700 007
फोन : 033-2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com
के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा. लि. कोलकाता – 700 009 में मुद्रित ।

अध्यक्षीय पृष्ठ-११ से :-

समाज धन के साथ-साथ साहित्य,
धर्म के साथ शिक्षा,
आडम्बर की जगह सादगी,
व्यापार के साथ समरसता को महत्व दें ।

क्रमांक

चिट्ठी आई है पृष्ठ : ४	शुभ दीपावली पृष्ठ : ५
सूचना पृष्ठ : ६	श्रद्धांजलि पृष्ठ : ७-८
सम्पादकीय पृष्ठ : ९	समर्पित नेतृत्व..... पृष्ठ : १०
अध्यक्षीय पृष्ठ : ११	सामाजिकता.... पृष्ठ : १२
उच्चशिक्षा कोष पृष्ठ : १३	अग्रसेन जयंति पृष्ठ : १४-१५
मांडणा पृष्ठ : १५-१६	चांदी के वर्क पृष्ठ : १७
धरोहर-३ पृष्ठ : १८-२४	वियतनाम यात्रा पृष्ठ : २५-२६
वृद्धावस्था पृष्ठ : २७-३१	युगपथ चरण पृष्ठ : ३२-३४

चिट्ठी आई है

बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ?

मैंने जून २००७ का ''समाज विकास'' देखा । वैवाहिक आचार संहिता देखी । सोचना यह कि वैवाहिक आचार संहिता का पालन किस प्रकार किया और करवाया जाय । सिर्फ किताबों में, लेख में और भाषणों से यह काम कतई नहीं होने वाला है । इसके लिए बहुत बड़े कदम उठाने की आवश्यकता है । यदि इसमें हम सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो समाज के उच्च मध्यम वर्गीय एवं निम्न मध्यम वर्गीय श्रेणी के लोगों को बहुत सकून एवं राहत मिलेगी । सम्मेलन को इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जो भी आवश्यक कदम हों वे ईमानदारी से उठाने होंगे ।

सवाल है कि ''बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे''। इसके लिए नेतृत्व सम्मेलन को ही करना होगा ताकि उस आन्दोलन को व्यक्तिगत न समझा जाय ।

इस विषय पर गंभीर प्रयास की सख्त आवश्यकता है तभी सम्मेलन की सार्थकता को लोग स्वीकार करेंगे । यद्यपि मेरी उम्र ७२ वर्ष की हैं और स्वास्थ भी बहुत अनुकूल नहीं रहता है, फिर भी मैं ईमानदारी के साथ आपको आश्वासन देता हुँ कि ऐसा कभी कार्यक्रम बने तो मैं उसमें शामिल होने के लिए तैयार हूँ ।

–नारायण प्रसाद कोटरीवाला, भागलपुर, बिहार ।

.....

''भय बिनु होय न प्रीति''

जून २००७ के अंक में अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा द्वारा अध्यक्षीय ''कृपया विवाहों में सादगी बरतें'' पढ़ा ।

यह बात कटु सत्य है कि ''भय बिनु होय न प्रीति'' १९९० के दशक की बात है जब असम में अल्फा का आतंक चरम पर पहुँचा हुआ था एवं पूरा मारवाड़ी समाज इस आतंक से बुरी तरह से प्रभावित था अपहरण, चंदा एवं डीमान्ड नोट धड़ल्ले से बाँटे जा रहे थे । समाज बड़े रूप में पैसे चुका रहा था, समाज में हो रहे हर छोटे बड़े समारोह की खबर असामाजिक तत्वों तक पहुँच रही थी एवं उसी अनुरूप उन्हें पैसे चुकाने पड़ रहे थे । ऐसे समय में भी विवाह आदि सामाजिक समारोह भी सम्पन्न हो रहे थे परन्तु उसका स्वरूप एकदम भिन्न था । रात होने से पहले ही शाम को बारात का पहुँचना, समय पर दुकाव सम्पन्न होना, सारे कार्यक्रम घर या विवाह भवन के अन्दर ही सम्पन्न होना, बारात की गाड़ियों को दूर कहीं ले जाकर पार्क करना, घर के बाहर शगुन के तौर पर माला या बल्ब की लड़ी लगाना, न सड़क पर नाचना न गाना एवं न ही पटाखे आतिशबाजी, न ही बैन्ड बाजा । पौ फटने के साथ-साथ सारा काम निबटाकर बहु को लेकर बारात का प्रस्थान करना एक आम बात हो गई थी । ऐसे विवाह से किसी को कोई एतराज नहीं था । सभी समाज सेवी सादगी का दमं भरने लगे थे । परन्तु जैसे ही अल्फा का डर समाज के सिर से उतरा, सारे नेगचार दिखावा, आदि फिर से मुँह चढ़कर बोलने लगे ।

मेरे कहने का अभिप्राय है कि जब तक समाज में कुछ भय नहीं होगा समाज उन चीजों को कतई नहीं अपनायेगा ।

प्रदीप खदरिया, देरगाँव, (असम)

.....

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी

समाज विकास के सितम्बर अंक में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, समाज की धरोहर लेख पढ़ा । इसमें स्वर्गीय रामकृष्ण सरावगी व स्व. बजरंगलालजी सोमानी के नामों के उल्लेख नहीं है । जिन्होंने वर्षों तक सोसाइटी में समार्पित भाव से अपनी सेवाओं का योगदान दिया ।

स्वर्गीय रामकृष्णजी सरावगी व स्वर्गीय बजरंग लालजी सोमानी के नाम लेख में रहने से सोसाइटी के इतिहास की पारदर्शिता बनी रहती ।

– मणीलाल जालान, कोलकाता-७०० ००७

.....

आप द्वारा प्रेषित ''समाज विकास'' पत्रिका निरन्तर प्राप्त होती है । राजस्थानी संस्कृति को धारदार बनाये रखने में आपके अथक प्रयास को समाज हमेशा याद रखेगा मारवाड़ी महिला समिति, कोलकाता एवम् प.बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने ''विवाह संबंधी जानकारी कक्ष'' का श्री गणेश कर बड़ा ही रचनात्मक कार्य किया है, मेरी ओर से उन्हें बहुत,बहुत बधाई । आशा है इनका प्रयास अवश्य ही सफल होगा ।

–भरत कुमार दहलान, कटिहार-८५४१०५

विशेष सूचना

दिपावली प्रीति मिलन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने सूचित किया है कि इस बार दिपावली प्रीति मिलन विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में न होकर महाजाति सदन के एनेक्सी हॉल में दिनांक १०.११.२००७ (शनिवार) सांय ४ बजे होना निश्चित हुआ है । सभी समाज बन्धुओं से अनुरोध किया गया है कि वे इस बात की जानकारी अपने सभी मित्रों को भी दे देवें व दिपावली मिलन में सभी को आमंत्रित किया गया है ।

–यह सूचना प्रांतीय महासचिव रामगोपाल बागला ने दी है।

दीपावली ''दीया'' का स्वभाव है ''देना''

–बालकृष्ण गोयनका, चैन्नई

दीपावली पर हम मिट्टी का दीपक, रूई की बत्ती और तेल के सहयोग से बने दीपक के प्रकाश का पूजन करते है । मिट्टी कुम्हार की, रूई किसान की, तेल-तेली के मेहनत से, इन तीनों की मेहनत से उनका दिया प्रकाश, उस स्थान को रोशन करता है, जहाँ पूजा होती है । लेकिन वह स्वयं के लिए थोड़ा सा भी प्रकाश, ऊर्जा बचा कर रख नहीं पाता। राजस्थानी घरों में इसे ''दीया'' कहते है–ठीक ही है, इसका स्वभाव देना ही है, उसका यही प्रकाश दान उसे दीपक बनाता है । दीप हमारे सम्यक ज्ञान-प्रकाश और प्रसन्नता का सच्चा प्रतीक है ।

दीया अधंकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर दुर्भाव से सदभाव की ओर ले जाने का द्योतक है। दीपमाला का पूजन जिस तरह दीये से दीये को जला कर प्रकाश का विस्तार किया जाता है । अमावस्या की अन्धेरी रात्री को, दिपावली के असंख्य बीजली के बल्बों की रोशनी शहर के समस्त गलियों को अलौकित करती है, ठीक इसी तरह से शील सदाचार का पालन करते हुए, सम्यक समाधि विकसित करके, जब मन में प्रज्ञा का आलोक जागता है तो मन शान्त शुद्ध निर्मल होकर अलौकिक हो जाता है । ध्यान साधना भी दीया का स्वरूप है जो हमारे अन्तरतम में पहुँचकर, अंर्तदीप जलाती है तब मन में प्रकाश की किरणें फूटनी शुरू हो जाती है ।

दिपावली पर हम घर की सफाई, स्वच्छ और सुन्दर बनाते हैं–साथ-साथ अवश्यक है हम स्वयं के घर याने अंर्तमन को शुद्ध और निर्मल बनाये, ज्ञान की ज्योती जलायें। आसक्ति से अनासक्ति की ओर बढे बिना, हमारा जीवन ज्योर्तिमय नहीं बन सकता ।

जन्म जन्मान्तरों के तामस को दूर करने के लिए मात्र अंर्त ज्योती को प्रज्वलित करने की जरूरत है । अगर अहंकार से छुटकारा पाना है तो आत्म ज्योती (अंर्तज्योती) को प्रकाशित करना होगा, ज्योति जगी कि अंधेरा हठा । प्रकाश के अभाव का नाम ही तो अंधेरा है । अपने जीवन को अलोकित करके ही कोई किसी अन्य की चेतना का दीप जलाने का सही मार्ग बता सकता है । स्वयं द्वारा प्रकाशित किया गया पथ, भावी जीवन को नानाविद्य विधन बाधाओं से बचा देता है ।

''दीप'' हमारे सम्यक ज्ञान-प्रकाश और प्रसन्नता का सच्चा प्रतीक है । ★

कविता

दीपान्विता

– रामनिरञ्जन गोयनका, गुवाहाटी

हे दीपान्विता
कर दो तुम गहन अमावस्या का तिमिर विच्छिन्न
कर दो हमारा अन्तर्मन आलोकित
हे दीपमालिके
तुम हो राष्ट्रमाता की दिव्य आरती
हमारी सभ्यता संस्कृति की निर्मल धारा
कामाख्या, भुवनेश्वरी, नारायणी, पार्वती,
दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, विश्वभारती,
तुम केवल दीपोत्सव नहीं,
तुम हो एक मानसिक स्थिति
एक दिशा और अनुभूति की चमक
समर्पण का भाव और जीवन की परिभाषा
कोटि कोटि भारतवासियों के प्राणों की अभिलाषा,
दीवार और द्वारों पर सज्जित दीपमाला
हमारे अन्तःकरण में प्रज्जवलित
ज्ञानदीप की एक विस्तारित शृंखला हो,
दीपावली है वस्तुतः हमारे भावना दीप की
सत्य शाश्वत आन्तरिक अभिव्यक्ति
जो हमारी चक्षुसीमा के पार तक को
आलोकित और प्रकाशित करती है,
और हमें सुपथ की ओर प्रेरित करती है ।
दीपावली पर हम करते हैं
परंपरागत कागज और कलम की पूजा
किन्तु संपदा की स्याही और श्रम की कलम से
साधना की माटी पर हस्ताक्षर करना ही होगा
व्यष्टि से ऊपर उठकर समष्टि के लिये पूजा
दीपावली की ज्ञान ज्योति
मानव जीवन का श्रेष्ठतम पक्ष मुखरित करे ।

समाज विकास अब इन्टरनेट
पर भी उपलब्ध है ।
www.samajvikas.in

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सूचना

नव गठित अखिल भारतीय समिति की प्रथम बैठक **बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के आतिथ्य में आगामी रविवार १६ दिसम्बर २००७ को अपरान्ह २ बजे से, शगून हाल, (पाल रेस्टूरेन्ट) ओम बिहार एपार्टमेन्ट, कदमकुआं, पटना-८००००३ में आयोजित की गयी है ।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा करेगें ।

सभी अखिल भारतीय समिति सदस्यों से अनुरोध है कि अपने पहुँचने की पूर्व सूचना निम्नलिखित पदाधिकारियों को भेजने की कृपा करें ।

श्री विनोद तोदी, महामंत्री
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
न्यु डाक बंगला रोड, पटना-८००००१
फोन : ०६१२-२२२२५६२

श्री राकेश बंसल
३०३बी, बंसल टावर
आर. के. भट्टाचार्य रोड, पटना-८००००४
फोन : ०९३३४११७७७८

सभी पत्राचारों की प्रतिलिपि सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय को भेजने की भी कृपा करेगें ।

भवदीय
राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

कोलकाता
३१ अक्टूबर २००७

बिहार :

मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, आगामी दिनांक १६ दिसम्बर २००७ को प्रातः १० बजे से बिहार के मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित किया है । सम्मेलन स्थलः शगून हॉल (पाल रेस्टोरेन्ट), ओम बिहार एपार्टमेन्ट, कदमकुआँ, पटना-८००००३ सम्पर्क : श्री विनोद तोदी-०९३३४११३४५ एवं श्री रविन्द्र अग्रवाल-०९८३५०३८७१९

महिला सम्मेलन :

थारी बांट जोहता अधिवेशन म
म्हारै घरा पधारो जी

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का १३वां राष्ट्रीय अधिवेशन आगामी २५-२६ दिसम्बर २००७ को झारखण्ड की कोयला नगरी के रामगढ़ कैन्ट में होने जा रहा है । इस १३ वें राष्ट्रीय अधिवेशन के समय पूरे राष्ट्र के कोने-कोने से आयी सभी बहनों को एक-दूसरे से मिलने का अवसर प्राप्त होगा । राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अरूणा जैन ने यह जानकारी दी।

श्रद्धांजलि

श्री नाहाटाजी के जाने से समाज को क्षति

– बुधिया

दीपचंद नाहटा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वाधान में एक शोक सभा आयोजित कर पूर्व महामंत्री श्री दीपचंद नाहटा को श्रद्धांजलि दी गयी। सम्मेलन के पदाधिकारियों और सदस्यों ने सम्मेलन के पूर्व महामंत्री स्वर्गीय दीपचन्द नाहटा की फोटो पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा ने की । उक्त अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि श्री नाहटा का जीवन कथनी और करनी का जीवंत उदाहरण था । समाज सुधार और समरसता के लिए उनकी प्रतिवद्धता अनुकरणीय थी । 'विलास विनाश है' उनका नारा था । इसको उन्होंने न सिर्फ नारा ही दिया बल्कि अपने जीवन में उतारा भी । सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने आपके जीवन को अपने जीवन पर उतारने की जरूरत पर बल दिया । उक्त अवसर पर श्री इन्द्रचन्द संचेती ने अपने बचपन की यादों को ताजा कर उनके गाँधीवादी विचारधारा पर प्रकाश डाला । सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरि प्रसाद बुधिया ने कहा कि श्री नाहटा जी के जाने से समाज को बहुत बड़ी क्षति हुई है । श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने उनके जीवन पर विस्तृत रूप से एक पुस्तिका प्रकाशन पर जोर दिया । हिन्दुस्तान क्लब की तरफ से श्री सुबीर पोद्दार एवं श्री जे० के० जैन, पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के तरफ से श्री विश्वनाथ सुल्तानिया, मारवाड़ी सम्मेलन कोलकाता शाखा की तरफ से श्री ओमप्रकाश पोद्धार, मारवाड़ी युवा मंच की तरफ से श्री अनील डालमिया, पूर्वांचल मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से श्री विश्वनाथ सिंधानिया स्व० नाहटा परिवार की तरफ से श्रीमती रचना नाहटा ने श्रद्धांजलि दी । पूर्व संसदीय कार्यमंत्री श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा ने अपने व्यक्तिगत परिचय की जानकारी देते हुए कहा कि श्री नाहटा जी एक वेहद संवेदनशील व्यक्तित्व थे, वे न सिर्फ अपने अद्योग बल्कि उद्योग से जुड़े प्रत्येक कर्मचारी के प्रति आप चिन्तित रहते थे । कई बार मेरे स्वास्थ के लिए भी पूछा करते, मैंने उनको कई सभा में कहा कि आप क्यों आते हैं तो उनका जबाब हमें सोचने पर विवश कर देता था । ९० वर्ष की आयु में भी अपने आपको कभी अस्वस्थ नहीं होने दिया ।

उक्त अवसर पर श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, नेमिचन्द कन्दोई, आत्माराम सोंथलिया, सुभाष मुरारका, लोकनाथ डोकानिया, संजय हरलालका, रामदयाल मस्करा, बालकृष्ण डालमिया आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की । इस श्रद्धांजलि सभा में एक शोक प्रस्ताव भी पारित किया गया । राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री द्वय श्री अरूण गुप्ता एवं श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, जयगोविन्द इन्दोरिया, सचिन शर्मा, राजेन्द्र खण्डेलवाल, मुकुन्द राठी, रूपा अग्रवाल आदि भी उपस्थित थे । ★

श्रद्धांजलि

शोक प्रस्ताव

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व महामंत्री दीपचंद नाहटा के आकस्मिक एवं दुःखद निधन पर यह सभा हार्दिक शोक व्यक्त करती है । सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं गांधीवादी श्री नाहटा का जीवन कथनी एवं करनी की एकता का जीवंत अदाहरण था । मृदुभाषी एवं मिलनसार श्री नाहटा आजात शत्रु थे । श्री नाहटा का अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से पिछले पाँच दशकों से अधिक घनिष्ठ एवं सक्रिय संबंध था । समाज सुधार एवं समरसता के लिए उनकी प्रतिवद्धता अनुकरणीय थी । दहेज, दिखावा, आडम्बर, फिजुलखर्ची आदि के विरूद्ध श्री नाहटा ने अपनी बात सदैव स्पष्ट एवं प्रभावशाली शब्दों में रखी । विलास विनाश है उनका नारा था ।

श्री दीपचंद नाहटा के निधन से समाज ने एक ऐसे विरले व्यक्ति को खो दिया है जिसकी कमी पूरी नहीं की जा सकेगी । मारवाड़ी सम्मेलन ने तो अपने एक स्तंभ को खो दिया है । अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिए श्री नाहटा सदैव एक प्रेरणा पुरूष रहेंगे ।

यह शोक सभा श्री नाहटा के निधन पर गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हुए समाज से उनके दिखाये गये आदर्शों एवं मूल्यों पर चलने का आह्वान करती है तथा परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की शांति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य एवं सहनशक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करती है ।

सीताराम शर्मा
राष्ट्रीय अध्यक्ष

राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

बायें ऊपर से श्री हरि प्रसाद बुधिया, श्री हरि प्रसाद कानोडिया, श्रीमती रचना नाहटा,
श्री सुबीर पोद्दार, श्री विश्वनाथ सुल्तानिया, श्री जुगल किशोर जैथलिया एवं आवरण पर श्री प्रबोध चंद्र सिन्हा

सम्पादकीय

भगवान हमें सुबुद्धि दें

हर वर्ष दिपावली आती है । इस वर्ष भी दिपावली आयेगी । यह अंक आपके हाथों में पहुँचते-पहुँचते दिपावली आ जायेगी । हम सब अपने घरों-व्यवसाय केन्द्रों की साफ-सफाई में लगे होंगे । घर के कुछ पुराने समानों को निकाल कर उसे रद्दी के हाथों बेच भी दिये होंगे । रंग-रोगन, साफ-सफाई, नये वस्त्र, खाते प्रत्येक वर्ष की भांती इस वर्ष भी बदले जा रहे होंगे । हर वर्ष किसी न किसी के जीवन में कुछ नया घटता भी है । कई के जीवन में दुःख तो कई के जीवन में सुखद क्षण भी आते हैं । हम अपने साल भर के कार्यों का आकलन करते हैं, देवी-देवताओं से प्रार्थना करते हैं कि नये वर्ष में ईश्वर उनकी मनोकामना पूरी कर दें ।

इस बार समाज विकास के माध्यम से मैं भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ "हे भगवान हमें सुबुद्धि प्रदान करें"। धन की दौड़ में समाज का एक वर्ग अपने बच्चों व परिवार को खोता जा रहा है । अपने परिवार को इस हालात में डाल देता है कि चाहते हुए भी परिवार और समाज का कोई व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता ।

हाल ही में एक समृद्ध परिवार में हुई घटना ने मानो समुचे समाज को झकझोर कर रख दिया । बच्चों को दोष देने से पूर्व समाज का हर वह व्यक्ति दोषी है जो अपने बच्चों को समाज के छोटे-छोटे कार्यक्रमों से न जोड़ कर उनके जीने के रास्ते को बन्द कर देते हैं । समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम समय-समय पर शहर की कई संस्थायें प्रायः हर माह कराती रहती है । हम चाहते है कि समाज का हर तबका ऐसे कार्यक्रमों से सपरिवार बच्चों के साथ भाग लेवें, ऐसे कार्यक्रमों के आयोजकों को प्रोत्साहित करें कि वे इस तरह के कार्यक्रम लेते रहे, जिससे बच्चों को अपने समाज के बच्चों से मिलने, बात करने का अवसर मिलता रहेगा । हर समाज में बच्चे एक जगह तलाश करते हैं, जहाँ उसे कुछ हमउम्र दोस्त मिले, मित्र मिले, हमारा समाज इस परिस्थिति से अलग नहीं है । हम व्यापारी वर्ग से आते हैं । संभवतः हमें कई बार परिवार के लिए समय न हो । दोष निकालने का वक्त नहीं है , समय से समाज को सबक लेने की जरुरत है । घटना एवं दुर्घटनाओं से आदमी सीख लेता है । परिपक्वता समाज की कुंजी होती है । हादसे से समाज का कोई व्यक्ति अपने आपको कमजोर न समझे, कई बार अर्जित की गयी संपदा ही दुश्मन बन जाती है । समाज के लोग भी साथ छोड़ देते हैं । 'धन', मान-मर्यादा की सबसे बड़ी शत्रु बन कर खड़ी हो जाती है । एक तरफ परिवार दुसरी तरफ मर्यादा तीसरी तरफ आज की पीढ़ी, एक-एक व्यक्ति को धर्मसंकट में डाल देती है ।

यही वक्त होता है जब समाज को किसी व्यक्ति की गलती को न खोजते हुए, संकट की घड़ी में उस व्यक्ति, परिवार को हिम्मत प्रदान करें । समाज का अपना संगठन हैं, संगठन को मजबूत करने वाले लोगों की संख्या कम एवं कमजोर करने वाले अधिक होते हैं । इस अनुपात को भी बदलना होगा ।

समाज का हर व्यक्ति, अपने व्यापार के साथ-साथ कुछ वक्त बच्चों एवं परिवार को भी दें, और कुछ समय समाज को भी न सिर्फ समाज को समाज के ही माध्यम से अपने बच्चों को ऐसा वातावरण दें जिससे वे छोटे-छोटे कार्यक्रमों के माध्यम, समाज से जुड़ सके ।

दीपावली में हर वर्ष की सफाई की जगह घर में हर रोज सफाई पर ध्यान देना होगा । घर में कैसे समाचार पत्र आते है, समाचार पत्र का स्तर क्या है, टी वी पर कौन सा न्यूज चैनल चलता है, इन्टरनेट पर वे क्या कार्य कर रहे हैं, शिक्षा का वातावरण कैसा है, कौन उसे पढ़ाता है, उनके कैसे-कैसे मित्र हैं, उनकी जरुरतों को कौन पूरा कर रहा है । कारोबार से ज्यादा जरुरी है परिवार, धन से ज्यादा जरुरी है बच्चे एवं आडम्बर से ज्यादा जरुरी हैं समाज । हमें प्रत्येक वर्ष शहर में जनसंख्या के अनुपात में कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने व कराने को विशेष रुप से प्रोत्साहित करना होगा ।

ऐसे कार्यक्रम जहाँ आज की युवापीढ़ी जाने में स्वयं रुची लें, ऐसे कार्यक्रम जिसमें समाज के बच्चे बड़ी संख्या में आपस में मिल सकें, बातें कर सके, ऐसे कार्यक्रम जिसमें हम बच्चों की मानसिकता को जोड़ सकें साथ में हम भी जुड़ सकें । यह बातें समय के अनुरूप हमें स्वीकार कर लेनी चाहिए । ★

★ समर्पित नेतृत्व से ही समाज का कायाकल्प

– मोहनलाल तुलस्यान, निवर्तमान अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पिछले वर्षों में मारवाड़ी समाज के वैवाहिक आयोजनों पर लगातार उंगलियां उठती रही हैं । उंगली उठाने वालों में मारवाड़ी समाज का ही एक वर्ग सक्रिय रहा है । यह वह वर्ग है जो समाज का अंग होकर भी समाजिक भावना से दूर रहता है । सामाजिक समस्याओं के सुधार की राह न दिखाकर समाज को अपमानित, पददलित करने में ही अपनी श्रेष्ठता का बोध करता है । ऐसे लोगों के चलते ही समाज में जटिलताएं उत्पन्न होती हैं और समाज दिग्भ्रमित होता है ।

सामाजिक सुधार की दिशा में सोचते हुए पाया कि जब तक समाज को समग्रता में जानने की उत्कंठा नहीं जगती, हर व्यक्ति और समुदाय की भावना से एकात्म स्थापित नहीं हो जाता तब तक किसी भी प्रकार के सुधार की कोशिश नकारा साबित होती है ।

मारवाड़ी समाज अन्य समाजों की तरह ही विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों, मानसिकता, कार्य-व्यापार के लोगों से मिलकर बना है । यह सोचना और कहना गलत है कि मारवाड़ी समाज में सभी व्यापारी हैं, आर्थिक रूप से सुदृढ़ है, समाज में प्रतिष्ठित हैं । सच्चाई यह है कि इस समाज में एक वर्ग व्यापारी होते हुए भी बहुत बड़ा वर्ग नौकरीपेशा वालों का है । इस समाज में भी गरीब-दुःखी लोग है, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

चूंकि समाज के सम्यक् विकास के लिए सभी वर्गों के अनुरूप एक समान आचार-संहिता की जरूरत पड़ती है, ताकि कोई भी व्यक्ति या समूह समाज को दिग्भ्रमित कर अपना हित न साध सके । इसलिए समाज के वरिष्ठ, चिन्तनशील समाजसेवियों, बुद्धिजीवियों, नागरिकों का कर्त्तव्य बनता है कि वे सामाजिक आचार-संहिता को लागू करने एवं समयानुसार उसमें परिवर्तन कर सर्वग्राही बनाने की पहल करें । सिर्फ बातों से कुछ नहीं होता, वास्तविकता तक पहुंचने के लिए निरंतर संघर्ष की जरूरत पड़ती है ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पुरोधा पुरूषों ने एक समय समाज को निर्देशित, संचालित करने का काम किया । जीवन में त्याग, बलिदान, परोपकार की भावना का विकास करके उन्होंने आदर्श समाज की नींव रखी । इन महान समाज सुधारकों का जीवन सीधा-सादा, सरल, आडंबरहीन था । ये पहले स्वयं पहल करते थे तत्पश्चात् समाज को उसका अनुसरण करने को कहते थे । बीती शताब्दी के चार और पांच के दशक में इन समाज-सुधारकों के आगे अपनी मनमर्जी करने की हिम्मत किसी की नहीं थी । बड़े व्यापारिक घराने भी सामाजिक आचार-संहिता का पालन करते थे ।

आज अगर सामाजिक आचार-संहिता जैसे किसी विधान का महत्व नहीं रह गया है तो इसके लिए समाज के लोगों के साथ-साथ बुद्धिजीवी, चिन्तक व मनीषी भी कम दोषी नहीं हैं । अगर ईमानदारी से कोशिश की गई होती तो परिस्थिति इस तरह बेकाबू नहीं होती ।

बहरहाल, अनावश्यक मीन-मेख न निकालकर आज के संदर्भ में जब हम सामाजिक समस्याओं विशेषकर वैवाहिक आयोजनों की पड़ताल करते हैं तो पाते हैं कि यह बदलती मानसिकता एवं समाज के एक वर्ग, जिसके पास परिश्रम व सदुपायों से अर्जित धन की जगह फाटकेबाजी एवं गलत तरीके से धन आया है, का शगल है । यह वर्ग समाज की प्राथमिकताओं से अनजान है । या यूं कहें कि धन के मद में यह वर्ग सामाजिक आचार-संहिता को अपने अनुसार बदलने को उद्यत है ।

यदि इस वर्ग पर अंकूश लगानी है तो सबसे पहले हमें अपनी प्राथमिकताएं सुनिश्चित करनी होंगी एवं उसे पूरी तरह समाज पर कड़ाई से लागू करना होगा । सामाजिक आचार-संहिता का उल्लंघन करने वालों को समझा-बुझाकर पहले उनमें समाज के प्रति अनुरक्ति जगानी होगी । आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक बहिष्कार का रास्ता अपनाकर समाज-विरोधियों को कटघरे में खड़ा करना होगा । पर यह काम आसान नहीं है । फतवेबाजी या बयानबाजी से कोई फायदा नहीं होने वाला है । आवश्यकता पहल करने की है ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने वैवाहिक आयोजनों सहित समस्त प्रकार के दिखावा, आडंबर, फिजूलखर्ची पर रोक लगाने की पहल की है । अभी पिछले दिनों बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कर इस बात की व्यवस्था की गई कि विवाह आयोजनों में खाद्य पदार्थों की कूल संख्या २१ होगी जिसमें पानी से सूप तक सब कुछ शामिल रहेगा । इस प्रस्ताव पर पहल करने का काम शूरू हो चुका है ।

देशभर में फैली सम्मेलन की शाखाएं इस प्रस्ताव के अनुरूप व्यवस्था लागू करने को उतावली हैं । सम्मेलन का केन्द्रीय नेतृत्व भी इस मूद्दे पर सजग, सतर्क है ताकि सामाजिक बुराइयों को समाज के कर्मठ, दूरदर्शी, समर्पित कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय भागीदारी से खत्म की जाय ।

ऐसे सोचना गलत है कि समाज में सेवाभावी, कर्मठ कार्यकर्ता नहीं रह गये हैं । सच तो ये है कि हर जगह समाज में ऐसे कार्यकर्ता हैं जिनके मन में समाज को बदलने की तमन्ना है, जिनके पास समाज को राह दिखाने का सोच है । जरूरत ऐसे लोगों को सामने लाने की है । अगर कर्मठ, सेवाभावी, समर्पित लोगों के हाथों में नेतृत्व की बागडोर रही तो समाज का कायाकल्प होने में देर नहीं लगेगी । ★

अध्यक्षीय

साईं बाबा सीरियल

मारवाड़ी समाज को आत्मचिन्तन की जरुरत

धारावाहिक टीवी सीरियलों में मारवाड़ी शब्द के गलत प्रयोग अब नई बात नहीं रह गयी । २० वर्ष पूर्व भी 'रजनी' नामक धारावाहिक टीवी सीरियल में मारवाड़ी समाज को नीचा दिखाने जैसी हरकत की गयी थी । यह बात अलग है कि उस समय वह सीरियल '**दुरदर्शन**' द्वारा दिखाया जाता था । आज '**स्टार प्लस**' द्वारा । चेनलों पर अपना आक्रोश तो हम जाहिर करेगें ही परन्तु साथ ही हमें यह भी देखना होगा कि क्या सच में मारवाड़ी समाज का कोई व्यक्ति कहानी का सच्चा पात्र है या किसी लेखक की मानसिकता से जन्मा पात्र जो ऐन-केन-प्रकारेन मारवाड़ी समाज पर प्रहार करने से नहीं चुकना चाहता ?

'**साईं बाबा**' न सिर्फ एक धार्मिक धारावाहिक है महाराष्ट्र प्रान्त की एक ताजा कहानी भी है जिसे कोई हजारों वर्ष नहीं हुए हैं, साईं बाबा ने किसी धर्म या जाति से बंधकर कार्य नहीं किया । मानवता की सेवा उनका सबसे बड़ा धर्म रहा है । ऐसे पात्र के समक्ष कई बार प्रयोगात्मक उदाहरण प्रस्तुत किए जाते रहे हैं, जिससे गांव के लोग उनकी बातों को आसानी से समझ सकें । इसके लिए किसी जाति के सम्बोधन की कोई जरुरत नहीं पड़ती परन्तु न सिर्फ लेखक, धारावाहिक के निर्देशक-डाईरेक्टर ने भी इस बात को महत्व न देकर यह दिखाने का प्रयास किया कि एक समुदाय विशेष के व्यक्ति ने बैल को गोशाला में न ले जाकर उसे कसाई के हाथों बिक्री कर दिया । इस तरह का प्रयास कोई पहला नहीं है, एक बार नहीं, दो बार, दो बार नहीं, बार-बार वह भी धारावाहिक सिरियलों के माध्यम से । यह संभव है कि धारावाहिकों में विभिन्न धर्म-जाति समुदाय के लोगों को उसकी वेशभूषा में दिखाया जाए, जैसे किसी पंजाबी, बंगाली, मराठी, गुजराती व इनकी भाषाओं में बोलकर पात्र का मजाक भी बनाया जाता रहा हैं। जो साधारण सी बातें हैं । हमें इस तरह के पात्र बनने व इस तरह के व्यक्तिगत स्तर के पात्र के मजाक पर जो कि कई बार धारावाहिकों / फिल्मों में देखने को मिलता है पर कभी कोई आपत्ति नहीं रही । परन्तु किसी भी समाज को अपमानित करने जैसे पात्र को विशेष रुप से 'जाति' शब्दों से अलंकृत कर दिखाना एक ओछी मानसिकता के अलावा ओर कुछ भी नहीं कहा जा सकता । भारत में ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ मारवाड़ी समाज न सिर्फ गाय, बैल को भी पालने हेतु गोशालाओं का निमार्ण कराया, और यह बात भी मान लेनी चाहिए कि देश में "गोशाला" शब्द राजस्थान की देन है । सिरियल में एक रतफ "गोशाला", दुसरी तरफ "कसाई" दो शब्दों का प्रयोग किया गया, जो स्वयं में विरोधाभास पैदा करती है । साथ ही इस तरह के पात्र लखू के साथ मारवाड़ी शब्द का सम्बोधन क्या औचित्य था यह बात सोचने की है ।

स्टार प्लस पर भड़के मारवाड़ी

समाज की छवि बिगाड़ रहा चैनल: सीताराम शर्मा

राकेश रंजन

जमशेदपुर। स्टार प्लस चैनल के खिलाफ मारवाड़ी समाज में खासा गुस्सा है। आरोप है कि चैनल समाज की छवि बिगाड़ने का प्रयास कर रहा है। समाज ने चैनल प्रबंधन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी है। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने बताया कि स्टार प्लस चैनल पर रविवार को प्रसारित किये जा रहे धार्मिक धारावाहिक साईं बाबा में मारवाड़ी समाज को [illegible] गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। धारावाहिक के एक पात्र का नाम लखू मारवाड़ी रखा गया है। 30 सितंबर के एपीसोड में दिखाया गया कि लखू मारवाड़ी को एक बैल गोशाला पहुंचाने के लिए दिया गया। लखू ने बैल को गोशाला पहुंचाने की बजाय 14 रुपये में कसाई के हाथों बेच दिया। सीताराम शर्मा कहते हैं कि वह तथ्यों को नहीं झुठलाते, लेकिन यह कुकृत्य करते दिखाये गये चरित्र का नाम मारवाड़ी दिखाना ही आपत्ति (शेष पेज १९ पर)

साईं बाबा सीरियल के पात्र लखु मारवाड़ी का नाम बदले अन्यथा कार्रवाई

साभार : हिन्दुस्तान, १३ अक्टूबर २००७

यह मानना पड़ेगा कि राजस्थानी, बिहारी, पंजाबी, गुजराती व बंगाली समाज के लोग देश के प्रायः हर प्रान्तों में बसे हैं, साथ ही बहुत से ऐसे समाज के लोग भी हैं जो सिर्फ मूल प्रान्तों तक ही सिमट कर रह गए । संभवतः इस तरह की प्रस्तुतीकरण के पीछे यह मानसिकता भी काम कर सकती है कि स्थानीय समाज के मन में प्रवासी समाज के प्रति हीन भावना को जन्म दिया जा सके । चुँकि समाज के कुछ लोग स्थानीय समरसता को ज्यादा महत्व नहीं देते । विरोध के साथ-साथ हमें समरसता पर भी ध्यान देंने की जरुरत है । हम **अपने साहित्य से ज्यादा धन को, शिक्षा से ज्यादा धर्म को और सादगी से ज्यादा आडम्बर को महत्व देने लगे हैं, जब तक समाज की ऐसी सोच रहेगी, लखू भाई मारवाड़ी जैसे पात्र की कमी नहीं हो सकती** । इसके लिए समाज धन के साथ-साथ साहित्य, धर्म के साथ शिक्षा, आडम्बर की जगह सादगी, व्यापार के साथ समरसता को महत्व दें, इसी में हम सबका और समाज का भला है। आप सभी को दीपावली की शुभकामनाओं के साथ ।

सीताराम शर्मा
अध्यक्ष

★सामाजिकता और अद्यमिता दोनों में अद्वितीय थे दीपचंद नाहटा

-राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अ. भा. मा. सम्मेलन

उद्यमिता और सामाजिकता का एक साथ निर्वहन बड़ा कठिन कार्य है । दोनों का क्षेत्र व्यापक है एवं इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए संपूर्ण समर्पण की जरूरत होती है । आमतौर पर देखा जाता है कि लोग किसी एक ही क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर पाते हैं । वैश्वीकरण के दौर में उद्यमिता के क्षेत्र में जो गलाकाट प्रतियोगिता शुरू हुई उसने इस परिस्थिति को और जटिल बना दिया है । आजकल अर्थ केन्द्रित व्यवस्था के बीच सामाजिकता को निभाना किसी चुनौती से कम नहीं । फिर भी कुछ लोग ऐसे होते हैं जो तीनों क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते है ।

श्री दीपचंदजी नाहटा ऐसे ही विरल व्यक्तित्वों में थे जिन्होंने उद्यमिता और सामाजिकता दोनों ही क्षेत्रों में अपना प्रभाव बनाया और जीवन पर्यंत सक्रिय रूप से काम करते रहे ।

विश्वप्रसिद्ध उपन्यासकार **गैबरियल गार्सिया मार्क्वेज** ने अपनी आत्मकथा में कहा है-'जीवन वह नहीं है जो किसी ने जिया है, बल्कि जो याद रहता है और सुनाने के लिए किस तरह याद रहता है, वह है ।'

श्री नाहटा ने जीवन में जो भी किया पूर्णयता समर्पण और निष्ठा से किया और अपने सिद्धांत पर अडिग रहे । यही वजह थी कि तत्काल न सही लंबे समय में लोगों को उनकी बातों की यथार्थता का ज्ञान हुआ और वे उनके प्रशंसक बनते गये।

नाहटाजी समर्पित गांधीवादी थे । बचपन से गांधीजी के सिद्धांतों के प्रति अनुरक्ति जगी और वह जीवन का अभिन्न अंग बन गया । उठते-बैठते, सोते-जागते गांधीजी के सिद्धांतों की दुहाई देते थे और यह उम्मीद करते थे कि देश और दुनिया से हिंसा का आलम खत्म होगा, लोग शांति से जी सकेंगे ।

आजादी के बाद देश में चाय उद्योग को बढ़ावा देने के लिए नई-नई तकनीकों को लागू करने में जिस तरह वे अग्रणी रहें उसी तरह जिन सामाजिक संस्थाओं से वे जुड़े वहां विकास की नई नीति बनाई ।

वे जिस संस्था से भी जुड़े तन-मन-धन से जुड़े । दिखावा और प्रदर्शन से कोसों दूर मूल मुद्दों तक अपने को सीमित रखा ।

जीवन के आखिरी वर्षों में असाध्य रोगों से पीड़ित होते हुए भी हर समारोह, कार्यक्रम में निरंतर उपस्थित होकर उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया ।

राजस्थान और राजस्थानी भाषा से उनके लगाव का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि शायद ही साम्प्रतिक काल का कोई राजनेता हो जो उनके आतिथ्य से छूटा हो । राजस्थान से किसी नेता के आगमन की खबर पाकर वे स्वयं उन्हें रिसीव करने पहुंचते और फिर समय-समय पर अपने घर में उन्हें आमंत्रित कर स्वरूचि भोज कराते। इसमें और भी लोगों को बुलाकर उसे समारोह का रूप दे देते ।

राजस्थानी भाषा के कवि, कलाकार और चिंतकों को यथासाध्य अनुदान देकर प्रोत्साहित करते ।

श्री नाहटाजी का जीवन, उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय है ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में उनका कार्य सर्वदा याद किया जायेगा । अंतिम क्षणों तक सम्मेलन की अग्रगति के लिए वे प्रयासरत रहे ।

उनके निधन से सम्मेलन ने एक स्तंभ खो दिया है जिसकी भरपाई निकट भविष्य में संभव नहीं है । कोलकाता के सामाजिक क्षेत्र से भी एक ऐसा व्यक्तित्व उठ गया है जिसकी एक झलक पाने को लोग आतुर रहते थे ।

हमलोग ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति एवं परिवार के लोगों की दुःख की इस घड़ी में शक्ति एवं धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं । ★

सम्मेलन ने प्रियंका को दिये एक लाख रूपये

उच्च शिक्षा कोष का श्री गणेश करते हुए श्री एस के तामादिया, श्री राम अवतार पोद्दार, श्री सीताराम शर्मा, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल एवं श्री रविन्द्र कुमार लड़िया

कोलकाता, रविवार, ७ अक्टूबर : जरुरतमंद मेधावी छात्र-छात्राओं की उच्चशिक्षा में मदद करने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा उच्चशिक्षा कोष बनाया गया है । इस कोष के जरिये मेधावी किंतु जरूरतमंद छात्र-छात्राओं के उच्चशिक्षा में अनुदान व ऋण के रूप आर्थिक सहायता दी जायेगी । इस कोष का श्री गणेश करते हुए उच्चशिक्षा कोष के अध्यक्ष पी.आर.अग्रवाल ने मेधावी छात्रा प्रियंका खण्डेलवाल को प्रथम किस्त के तौर पर एक लाख चार हजार रूपये का अनुदान दिया । प्रियंका हैदराबाद आई सी ए एफ आई संस्था की एमबीए की छात्रा है । प्रियंका को इस पाठ्यक्रम के लिए प्रायः ६ रुपये लाख चाहिए थे जिनमें से कोष द्वारा उसे कुल दो लाख रूपये दिये जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि पहले की तुलना में अब मारवाड़ी लड़कियां हर क्षेत्र में बाजी मार रही हैं । गरीब लेकिन मेधावी छात्र-छात्राएं साधन न होने के बावजूद अपने परिवार, समाज व देश का नाम रोशन कर रहे हैं । इस कोष के माध्यम से इन छात्र-छात्राओं की मदद की जायेगी । कलकत्ता चैंबर ऑफ कॉमर्स में आयोजित इस कार्यक्रम में लंदन मूल की कंपनी वेदांता एल्यूमिनियम के निर्देशक एस.के. तामादिया बतौर प्रधान अतिथि मौजूद थे । इस मौके पर श्री अग्रवाल ने बताया कि समाज में यह भ्रम है कि मारवाड़ी समाज के लोग गरीब नहीं होते । इस समाज में भी संपन्न व विपन्न लोग हैं । सम्मेलन आर्थिक सहायता देकर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में समाज के मेधावी छात्रों को पारंगत कराना चाहता है । पैसों के अभाव में विद्यार्थी तकनीकी शिक्षा पूरा नहीं कर पाते हैं । वर्तमान समय में तकनीकी पेशेवरों की मांग बढ़ी है । चीन, भारत से तकनीकी पेशेवरों की मांग भी कर रहा है । लेकिन मांग के अनुपात में आपूर्ति नहीं हो पा रही है । वे छात्र धन्यवाद के पात्र हैं, जो स्वयं तकनीकी शिक्षा पूरी करने के लिए आगे आ रहे हैं । आगे बढ़ने के लिए सम्मेलन उन्हें आर्थिक सहायता मुहैया करा रहा है । सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी समाज में इतने अधिक मेधावी छात्र हैं कि उनकी सहायता करने के लिए समाज का फंड पर्याप्त नहीं है । कार्यक्रम में सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री द्वय श्री अरुण गुप्ता व श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, श्री महाबीर राउत, श्री लोकनाथ डोकानिया ने सक्रिय भागीदारी ली ।

- स्थापना काल से ही बालिका शिक्षा पर जोर ।
- प्रान्तीय स्तर पर स्कूली शिक्षा कोष की स्थापना ।
- वर्ष २००७ में उच्च शिक्षा कोष की स्थापना ।
- तकनीकि उच्च शिक्षा के लिए अनुदान ।
- प्रथम अनुदान प्रियंका खण्डेलवाल को ।

उच्च शिक्षा कोष समिति

अध्यक्ष उपसमिति : श्री प्रह्लादराय अग्रवाल

सदस्य : श्री हरि प्रसाद बुधिया, श्री मामराज अग्रवाल, श्री सज्जन भजनका, श्री बी.डी. सुरेका, श्री हरिकृष्ण चौधरी, श्री सतीश देवड़ा, श्री रतन शाह, श्री नन्दलाल रुंगटा, श्री गौरीशंकर कांया

पदेन सदस्य : श्री सीताराम शर्मा, श्री राम अवतार पोद्दार एवं श्री हरिप्रसाद कानोडिया

श्री अग्रसेन जयंती

मारवाड़ी समाज विकास में साझीदार बने : सुधीर महतो

भाईचारगी का माहौल चाहता है मारवाड़ी समाज : सीताराम शर्मा

पूर्वी सिंहभूम जिला अग्रवाल सम्मेलन द्वारा आयोजित अग्रसेन जयंती के समापन समारोह

अ.भा.म. सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा, उपमुख्यमंत्री श्री सुधीर महतो, सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया

अ.भा.म. सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा, पूर्वी सिंहभूम जिला अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष मुरलीधर केडिया, सिंहभूम चैम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष आर.एन गुप्ता व अन्य पदाधिकारीगण

जमशेदपुर : अग्रवाल समाज अग्रणी समाज है, पुराने जमाने के बुजुर्गों की कहावत है, जहां न पहुंचे बैलगाड़ी वहां पहुंचे मारवाड़ी अर्थात समाज के लोग दूर-दूर तक पहुंच कर समाज के विकास कार्य में लगे हुए हैं । उक्त बातें झारखंड के उपमुख्यमंत्री सुधीर महतो ने कही । वे शुक्रवार को माइकल जॉन सभागार में पूर्वी सिंहभूम जिला अग्रवाल सम्मेलन द्वारा आयोजित अग्रसेन जयंती के समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने समाज की उपलब्धियों की गिनाते हुए कहा कि समाज के लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि किस जगह पर कहां विकास होगा । समाज के लोगों ने शिक्षा व व्यवसाय जगत में काफी सफलता हासिल की है । श्री महतो ने कहा कि अग्रसेन महाराज के १८ पुत्रों के नाम से ही वंश चल रहा है। अग्रसेन जी जिस समानता की बातें करते थे, उसमें कमी आयी है । कमी को पूरा करने के लिए समाज के लोगों को संकल्प लेने की जरूरत है । इसके पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन सुधीर महतो, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा, पूर्वी सिंहभूम जिला अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष मुरलीधर केडिया, सिंहभूम चैम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष आर.एन गुप्ता, रविन्द्र कुमार लाड़िया एवं झारखंड प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष प्रेम नारायण गर्ग ने दीप जला कर किया ।

इस अवसर पर अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी समाज आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में अव्वल है । पर समाज के लोग राजनीतिक चेतना के मामले में पिछड़े हैं । इसके लिए समाज के लोगों को जागृत होना होगा । लौहनगरी के एक मुख्य मार्ग का नामकरण महाराज अग्रसेन एवं नगर के प्रमुख चौराहे पर महाराज अग्रसेन की मूर्ति की स्थापना की जानी चाहिए । उप मुख्यमंत्री ने इसके लिए अपने स्तर से मदद करने का आश्वासन दिया । इस अवसर पर मारवाड़ी समाज की युवतियों ने नृत्य नाटिका का मंचन भी किया । अग्रसेन जयंती के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष मुरलीधर केडिया, महामंत्री बजरंगलाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष श्रीकृष्ण खेतान पश्चिमांचल शाखा अध्यक्ष रामनिवास गुप्ता, निर्मल काबरा, सिंहभूम चैंबर ऑफ कामर्स के महासचिव सुरेश सोंथालिया आदि उपस्थित थे ।

कोषाध्यक्ष नहीं, अध्यक्ष बनो

अधिवेशन से पूर्व एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि 'अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन ने 'कोषाध्यक्ष नहीं, अध्यक्ष बनो' का नारा दिया है । सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा का मानना है कि समाज में राजनीतिक चेतना पैदा करने की जरूरत है । नारा इसी उद्देश्य से दिया गया है। वह मानते हैं कि पैसे के बूते राजनीति में कोषाध्यक्ष तो बना जा सकता है पर निर्णायक पद हासिल करना मुमकिन नहीं । इसके लिए समाज को राजनैतिक रूप से जागृत करना होगा । जागृति अभियान के तहत वर्ष २००८ में दिल्ली में तीन दिवसीय राजनीतिक कार्यकर्ता सम्मेलन करने की योजना बनायी गयी है । इससे पूर्व राज्यों में भी सम्मेलन हो रहे हैं । अग्रसेन जयंती समारोह में भाग लेने आये अध्यक्ष शर्मा ने बिष्टुपुर स्थित चैम्बर भवन में संवादताओं से बातचीत में कहा कि सम्मेलन की शाखाएं १२ प्रांतों में काम कर रही है. । गुजरात, दिल्ली और उत्तरांचल में नयी शाखाएं खोली जा रही हैं । सम्मेलन सामाजिक परिवर्तन का बीड़ा उठाये हुए है । समाज सुधार और समरसता के नारे पर अमल करते हुए सम्मेलन की चिन्ता संयुक्त परिवार के बिखरने व दहेज प्रथा को लेकर भी है । इस मुद्दे पर अभियान चलाया जा रहा है । नौ सूत्री वैवाहिक आचार संहिता बनायी गयी है। उच्च शिक्षा पर जोर देते हुए उच्च शिक्षा कोष का भी गठन किया गया है । शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी समाज झारखंड की तरक्की में योगदान देने को तत्पर है । समाज किसी तरह के आरक्षण की मांग नहीं करता । सिर्फ भाईचारगी का माहौल चाहता है । कानून-व्यवस्था अनुकूल होनी चाहिए । संवाददाता सम्मेलन में सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री अरूण गुप्ता, एन.डी. केडिया, निर्मल काबरा, सुरेश सोंथालिया आदि उपस्थित थे ।

दीपावली के मांडने

-अनंत कुशवाहा

भारत एक कृषि प्रधान देश है । दीपावली का त्योहार इस खेतीहर देश का एक मांगलिक उत्सव है । यह शरद ऋतु का वह समय होता है जबकि हमारी जीवन दायिनी अन्न लक्ष्मी का उत्पादन होता है । इस समय धान कटकर घरों में आ जाता है, कपास में फूल खिलने लगते हैं और तिलों से तेल निकाला जाता है । इसी अन्न-धन रूपी लक्ष्मी के स्वागत के लिए घर, गांव और शहर का जनमानस एकजुट होकर उल्लास, मनाने लगता है । स्त्रियां घर आंगन को लीपपोत कर साफ-सुथरा करती हैं अभाव रूपी कूड़े-करकट को झाड़-बुहार कर नष्ट कर दिया जाता है और फिर मनुष्य का कलाकार मन आंगन और दीवारों पर अलंकरण करने को आतुर हो उठता है ।

दीपावली के दिन स्त्रियां घर आंगन पक्का हो तो उसे धोकर या कच्चा हो तो लीपकर उस पर खड़िया व गेरू से मांगलिक चौक पूरती हैं, लक्ष्मीजी के पगल्या (पांव) बनाती हैं । फिर गेरू व खड़िया से ही दीवाल पर एक चौखटा बनाकर उसमें लक्ष्मी-गणेश के चित्र मांडती हैं । यह लक्ष्मी इस अवसर पर उत्पन्न होने वाली अन्न लक्ष्मी है और गणेश लोक देवता हैं । अन्न रूपी लक्ष्मी के उत्पादन में लोक का सहयोग भी परम आवश्यक है । फिर चित्र बनाया जाता है-लक्ष्मी के आसन कमल का, यह

कमल इस बात का प्रतीक है कि जिस तरह कीचड़ में रहकर भी कमल कीचड़ से विलग रहता है उसी तरह लक्ष्मी भी उसी के पास रहती है जो इसका अभिमान नहीं करता । धन लक्ष्मी की उत्पत्ति के लिए हम मेघों की कृपा पर निर्भर करते हैं । इसीलिए लक्ष्मी के दोनों ओर मेघों के प्रतीक स्वरूप दो सजीव हाथियों के चित्र अंकित किए जाते हैं । यहीं पर एक ओर प्रकृति की आदि शक्ति के स्त्रोत्र दिन व रात के प्रकाश स्तम्भ सूर्य व चन्द्रमा के चित्र भी अंकित किये जाते हैं । जहां लक्ष्मी का निवास होता है वहां आनन्द और उल्लास के प्रतीक दो नाचते मयूरों के चित्र भी बनाए जाते हैं ।

दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा होती है-यह त्योहार भी हमारी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का ही अंग है । कृषि को उन्नत बनाए रखने के लिए गोधन अर्थात बछड़ों की समृद्धि आवश्यक होती है । प्राचीन काल में बैलों की सहायता से ही खेती की जाती थी । इसलिए इस दिन किसानों के घरों में सहज उपलब्ध गोबर से आंगन में कुछ आकृतियां भी बनाई जाती हैं । घर के मुख्य द्वार के सामने तीन मानव आकृतियां गोबर से बनाई जाती हैं जिनमें दो बड़ी व एक छोटी आकृति होती है । बड़ी आकृतियों के पांव घर की ओर व सिर बाहर रास्ते की ओर होता है जो इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति का सिर यदि बाहर के कामों में लगा रहे और पांव घर की ओर हों तो यह सुन्दर जीवन का परिचायक है । छोटी आकृति इन दो आकृतियों के नीचे घर की देहरी से सटकर आड़ी और लेटी हुई शक्ल में बनाई जाती हैं । इसका सिर पूर्व की ओर और पांव पश्चिम की ओर होते हैं । सिर का सूर्योदय की ओर होना और पांव का सूर्यास्त का होना भी स्वस्थ जीवन का प्रीतक है । इन तीन आकृतियों के आस-पास ही कुछ हमारी पाम्पारिक संयुक्त परिवार प्रणाली के प्रतीक चिन्ह होते हैं जैसे-चक्की पीसने वाली, धान कूटने वाली, दही बिलौने वाली व रोटी बनाने वाली महिलाएं तथा एक थाली में बैठकर खाना खाने वाले पांच बहिन भाइयों के चित्र भी बनाये जाते हैं ।

दीपावली पर रंगोली

दीपावली करीब आ रही है । आप भी रंगोली में अपनी कल्पना के रंग भरने की कोशिश कीजिये । कला भावना को उभारती है और संस्कृति के विकास में अपना योगदान देती है ।

रंगोली एक प्राचीन लोककला के रूप में पूरे भारत में प्रचलित है । यह लोककला भारतीय संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक भी है । हमारे देश के विभिन्न प्रान्तों में यह रंगोली अलग-अलग नामों से जानी जाती है । जैसे बंगाल, असम में इसे अल्पना, महाराष्ट्र, गुजरात में रंगोली, उत्तरप्रदेश में चौक पूरना, राजस्थान, मालवा में मांडणा तथा दक्षिण में 'कोलम' कहते हैं ।

रंगोली बनाने के लिए पिसे हुए चावल, गेहूँ का आटा, खड़िया, मिट्टी आदि का प्रयोग किया जाता है । इसमें रंग भरने के लिए वनस्पतियों से निकाले गये रंग गेरू, हल्दी, नील, ईंट का चूरा, कच्चे कोयला का चूरा आदि काम में लिया जाता है । आजकल बाजारों में सफेद पत्थर का पिसा हुआ पाउडर हर रंग में मिलता है ।

रंगोली बनाने के पूर्व आंगन को गोबर, मिट्टी से लीप लेना चाहिये । यदि पक्का फर्श हो तो उसे धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिये । इसके बाद रंगोली बनानी चाहिये ।

रंगोली बिन्दु की सहायता से बनायी जाती है । जिस प्रकार का नमूना बनाना हो उसके अनुसार बिन्दु डालकर नमूना रेखांकित किया जाता है ।

रंगोली के नमूने ज्यामिति के आधार पर भी बनाये जाते हैं । जैसे गोल, तिकोने, चौखूटे, षटकोण, अष्टचक्र आदि रूपों के नमूने की मुख्य रेखाएं सफेद रंग से बनाई जाती हैं । नमूने के बीच में अन्य रंग भरे जाते हैं ।

आजकल बाजार में रंगोली के सांचें विविध नमूने में मिलते हैं । जिन्हें देखकर घर में रंगोली बनाई जा सकती है । रंगोली किसी भी शुभ पर्व व उत्सव पर बनाई जाती है। जैसे विवाह, तीज, त्यौहार, मांगलिक उत्सव आदि । इसके अलावा किसी विशेष अवसर के भोज में थाली के इर्द-गिर्द स्थान को बेल बूटे के नमूने में रंगोली बनाकर सजाया जाता है ।

किसी शुभ अवसर पर 'स्वस्तिक' अवश्य बनाया जाता है स्वस्तिक कल्याण व मंगल का सूचक माना जाता है । ऐसे तो रंगोली हर शुभ पर्व पर बनाई जाती है । पर नवरात्रि व दीपावली पर रंगोली बनाने का अपना विशेष महत्व होता है ।

दीपों से सजी दीपावली करीब आयी कि गाँव-गाँव शहर-शहर रंगोली की धूम मच जाती है । घर-आंगन विविध नमूने की रंग-बिरंगी रंगोली से सजने लगते हैं ।

नवरात्रि से लेकर दीवाली तक गृहणी प्रतिदिन आंगन में रंगोली बनाती है । दीवाली के दिन तो घर का हर कोना रंगोली की सज्जा से दमक उठता है । इसके साथ गृहणी की धार्मिक भावना भी मन में छिपी रहती है ।

दीवाली के दिन पूजा गृह, तुलसी चौरा, बरामदा, देहरी, मुखद्वार, सीढ़ियों के किनारे रंगोली के विभिन्न प्रकार के नमूने व बेलबूटे, अपनी इन्द्रधनुषी छटा बिखेरती है । इनके बीच झिलमिलाते हुए दीपक अंधेरे को भगाकर अपनी सुनहरी किरणें चारों ओर फैलाते हैं । ★

★ चांदी के वर्क की हकीकत

– मेनका गांधी

भारत में कानून है कि हर शाकाहारी खाद्य पदार्थ को हरे चिह्न से तथा मांसाहारी खाद्य पदार्थ को मैरून चिह्न से चिह्नित किया जाए । यदि कोई निर्माता अपने अत्पादन में गलत लेबल लगाकर हेराफेरी करता है तो उसे कई साल की सजा हो सकती है । तो फिर मिठाई निर्माता कानून बनने के बाद से अभी तक गिरफ्तार कैसे नही किए गए ? दूध को शाकाहारी माना जाता है ताकि शक्तिशाली डेयरी लॉबी को खुश किया जा सके । लेकिन हर मिठाई पर लगे वर्क (सिल्वर फॉयल) को हटाए बिना मिठाई को शाकाहारी नही कहा जा सकता ।

'ब्यूटी विदाउट क्रूअल्टी' नामक पुणे के एक स्वयंसेवी संगठन ने खाद्य उत्पादों में मिलाए जाने वाले अवयवों पर एक विशिष्ट पुस्तिका प्रकाशित की है जो पूरे वर्क उद्योग के बारे में बताती है । इस रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्क कैसे बनाया जाता है । वर्क निर्माता वधशालाओं में जाकर पशुओं का चयन करते हैं । चाहे पशु नर हो या मादा, उसका वध करने से पहले यह देखने के लिए उसकी खाल मुलायम है या नहीं ।

इसका सीधा अर्थ यह है कि विशेष रूप से इसी उद्योग के काम में लाने के लिए भारी संख्या में भेड़, बकरी और मवेशियों की हत्या की जाती है । हत्या के बाद पशुओं की खाल की गंदगी साफ करने के लिए बारह दिन तक टंकी में डुबाए रखा जाता है। इसके बाद मजदूर इस खाल को छीलते है जिसे वे 'झिल्ली' कह कर पुकारते है । खाल की निचली पर्त केवल एक टुकड़े में ही उतारी जाती है । इन्ही पर्तों को मुलायम करने के लिए एक प्रक्रिया के तहत ३० मिनट तक उबाला जाता है । बाद में सूखने के लिए उसे लकड़ी के तख्तों पर डाल दिया जाता है ।

एक बार सूख जाने के बाद मजदूर इसे १९ x १५ वर्ग सें.मी. टुकड़ों मे काँटते हैं । इन्ही टुकड़ों से थैली बनाते है जिसे 'औजार' कहते है और उनका ढेर बनाया जाता है । बाद में यही ढेर एक बड़े चमड़े के थैले में भर दिया जाता है जिसे खोल कहते हैं । अब इस खोल में चांदी या सोने की बिल्कुल झीनी पत्तियां रखी जाती हैं । 'औजार' में रखी जाने वाली चांदी की बारीक पत्तियों को 'अलगा' कहते हैं । अब इस 'अलगा' को औजार में रखकर फिर खोल में भरा जाता है । फिर घंटों तक कारीगर लकड़ी के हथौड़े से पीटते है जिससे चांदी के वर्क तैयार होते है । इसी वर्क को मिठाई की दुकानों पर भेजा जाता है ।

आपको कुछ आंकड़ों की जानकारी होनी चाहिए । एक पशु की खाल से केवल २०-२५ टुकड़े या थैली तैयार होती है। हर ढेर में ३६० थैली होती है । एक ढेर से लगभग ३० हजार वर्क के टुकड़े बनते है जो एक बड़ी मिठाई की दुकान में आपूर्ति के लिए कम ही है ।

हर साल ३० हजार किलो (३० टन) वर्क की खपत केवल मिठाइयों में होती है। यही मिठाई हम सब खाते है । वर्क कम्पनियां द्वारा २.५ करोड़ ढेरनुमा बुकलेट बनाई जाती है । ये कम्पनियां वधशालाओं से अपने सम्पर्कों को गुप्त रखती है लेकिन सच्चाई यह है कि इस उद्योग से जुड़े लोग उन्मुक्त तरीके से पशुओं की हत्याओं में लिप्त है । हृदय से हर धर्मावलम्बी यह जानता है कि वर्क मांसाहारी है, लेकिन वह लगातार निर्भीकता से इसका सेवन करता है । विस्मयकारी है कि सभी प्राणियों पर सभी प्रकार की हिंसा और अमानवीय कृत्यों का विरोध करने वाले कत्लखानों से निकली चमड़ी की परत से बने वर्कों का धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं । अनेक लोग झांसा देकर खुद को यह समझाने का प्रयास करते है कि यह मसीन से बना हुआ है । बिना क्रूरता सुन्दरता एक श्रमसाध्य कार्य है । पूरे देश में या इस पृथ्वी पर वर्क का ऐसा कोई टुकड़ा नहीं है जो मशीन से बना हो । इन्टरनेट पर मुझे जालंधर से एक व्यक्ति ने पत्र भेजा जिसमें दावा किया गया था कि उसके पास जर्मनी के सहयोग से बनी एक ऐसी स्वचालित मशीन है जो विशेष रूप से भारत में बने पूर्ण शुद्ध और वातावरण नियंत्रित कागज में चांदी के टुकड़ों को पीटकर वर्क बनाती है और इसका संचालन अनुभवी और प्रशिक्षित इंजीनियरों का दल करता है । मैने इसका पता लगवाया । इस तरह की कोई फैक्ट्री नहीं मिली । यहां तक कि नाम भी नहीं । यह सरासर झूठ था । वर्क का उत्पादन मुख्यतः उत्तरी भारत में होता है । पटना, भागलपुर मुजफ्फरपुर और गया (बिहार में बौद्धों के पवित्र केन्द्र), कानपुर, मेरठ और वाराणसी (उत्तर प्रदेश में हिन्दुओं के पवित्र शहर), जयपुर, इन्दौर, अहमदाबाद और मुम्बई ऐसे मुख्य नगर है जहां वर्क का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है । दिल्ली, लखनऊ, आगरा और रतलाम की वधशालाओं से वर्क बनाने के लिए पशुओं की नरम खाल से बनी थैलिया इन शहरों में भेजी जाती है ।

वर्क केवल मांसाहारी खाद्य पदार्थ ही नही हैं, वरन यह मानव शरीर के लिए काफी हानिकारक भी है । चाहे शाकाहारी हो या मांसाहारी, इंसान चांदी हजम नहीं कर सकते और इसके खाने से कोई लाभ भी नहीं है । नवम्बर २००५ में लखनऊ में वर्क पर इंडस्ट्रियल टॉक्सीकोलोजी रिसर्च सेन्टर द्वारा किए गए अध्ययन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि बाजार में उपलब्ध चांदी के वर्क जहरीले ही नहीं बल्कि कैंसर कारक भी हैं, जिसमें सीसा, क्रोमियम, निकिल और कैडमियम जैसी धातुएं भी मिली हुई हैं। जब ऐसी धातुएं शरीर में खाद्य पदार्थ के रूप से जाएंगी तो निश्चित ही ये कैंसर का कारण बनेंगी । रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इस उद्योग में काम करने वालों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है । ★

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी

मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर का नव निर्मित भवन

प्राकृतिक सौंदर्य से सराबोर, माँ कामख्या के आगोश में बसे असम प्रदेश को सदियों पूर्व मारवाड़ी समाज ने अपनी कर्मस्थली के रूप में अंगीकार किया, सुविधाओं और संपर्क साधनों से विहीन एक अनजाने प्रदेश में अपने अथक श्रम, लगन के साथ न केवल स्वयं को स्थापित किया बल्कि प्रदेश को भी आर्थिक संबल प्रदान करने में सहयोग दिया । परोपकार, दानशीलता, और सेवाभाव मारवाड़ी समाज के वंशानुगत गुण रहे हैं, उन्ही भावनाओं के परिणाम है आज सारे देश में मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित व संचालित अनगिनत जनसेवी संस्थायें कार्यरत है । श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी (असम) उसी की एक कड़ी है श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय अपने जीवन के ९२ साल पुरे कर चुका है । इन ९ दशकों का एक गौरवशाली इतिहास भी है । इस संस्था ने जहां लाखों पीड़ित मानवों की न सिर्फ सेवा की, साथ ही साथ इस दीर्घ काल में समाज में अपनी एक पहचान भी कायम की है । जहां औषधालय ने समय के अनुसार अपनी सेवाओं का विस्तार किया वहीं समाज के सहयोग से दो नये हॉस्पिटल का निर्माण कर यह प्रमाणित भी कर दिखाया कि असम का मारवाड़ी समाज भी व्यवसाय के साथ, सेवा के क्षेत्र में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाने में देश के अन्य भाग से किसी भी तरह कमजोर नहीं है ।

औषधालय का इतिहास :

यह औषधालय बंगला तारिख १ जेठ संवत् १९७३ साल में स्थापित किया गया था जिसमें स्व० नागरमलजी केजड़ीवाल, स्व० लक्ष्मीनारयणजी लोहिया व स्व० कामख्यालालजी सीकरिया जी के नामों का विषेश उल्लेख मिलता है । संस्था के संक्षिप्त इतिहास से पता चलता है कि संवत् १९७३ से लेकर संवत् १९७६ तक इस औषधालय का कार्य स्व० कामख्यालालजी सीकरिया जी के व्यापारिक स्थल से चलता रहा, प्रारम्भ में इसका नाम :

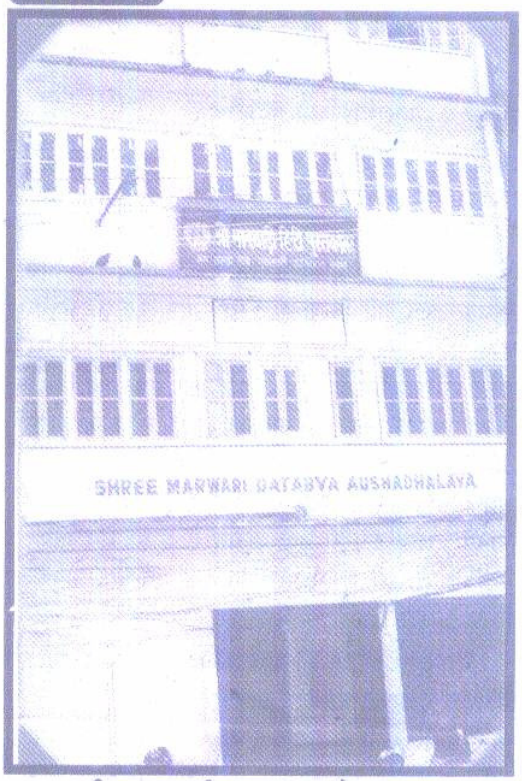

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय

''श्री श्री कमक्षा भगवती दातव्य मारवाड़ी औषधालय'' का उल्लेख मिलता है । संस्था के तत्कालिन प्रधानमन्त्री स्व० रामनारायणजी बावरी ने अपने कार्यकाल की १३ वर्षों की रपट एक साथ प्रस्तुत करते हुये लिखा था : ''श्री श्री कमक्षा भगवती दातव्य मारवाड़ी औषधालय का आय तथा व्यय का विवरण श्री गौहाटी पिंजरापोल की किताब में उपस्थित करता हूं । इस दस्तावेज में सबसे महत्वपूर्ण बात यह देखने को मिलती है कि दानदाताओं के अलावा पंचायती द्वारा व्यापारी समुदाय पर किये गये जुर्माने की रकम का भी उल्लेख मिलता है । संवत् १९८७ तक ''श्री श्री कमक्षा भगवती दातव्य मारवाड़ी औषधालय'' का उल्लेख मिलता है और संवत् १९८८ से ''श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय'' के नाम से संस्था को जाना जाने लगा।

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय अपने जीवन की शतक दशाब्दी में प्रवेश कर चुका है । विगत ९ दशकों में इस संस्था ने करोड़ों जरूरतमंदों की सेवा करते हुए न केवल मारवाड़ी समाज में बल्कि पूरे असम राज्य में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की । सन् १९८५ में इस संस्था की प्रथम संतान का जन्म हुआ ''मारवाड़ी मेटरनिटी हास्पिटल'' जिसमें प्रतिवर्ष प्रायः ५००० बच्चों का जन्म होता है । यह संख्या सरकारी अस्पतालों के बराबर हैं । सन् २००२ में इस संस्था की द्वितीय संतान का जन्म हुआ, जिसका नामकरण किया गया ''मारवाड़ी हास्पिटल एवं रिसर्च सेंटर'' इस सेंटर में प्रतिदिन ८-१० शल्य चिकित्साऐं होती है । साथ ही अस्पताल द्वारा निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाता है ।

इस क्षेत्र में अस्पताल की प्रतिष्ठा का अंदाज इस बात से ही लगाया जा सकता है कि केन्द्रीय सरकार के स्वास्थ और शिशु कल्याण विभाग द्वारा 'मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल' को 'सर्वोत्तम शिशु मित्र' के पुरस्कार से सम्मानित किया है । इस प्रसुतिगृह अस्पताल में शिशु मृत्युदर राष्ट्रीय औसत के समक्ष नगण्य ही नहीं, प्रायः शून्य ही माना जाऐगा ।

राष्ट्रीय स्तर पर यूरोपियन कमीशन की योजना के अन्तर्गत मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल, गुवाहाटी शहर की

मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल

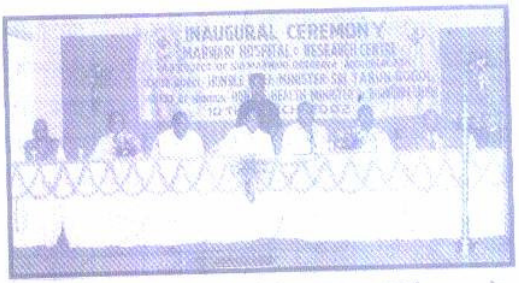

मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर का नव निर्मित भवन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर लिया गया चित्र

विभिन्न ग्रामिण अंचलों में महिलाओं एवं बच्चों हेतु प्रतिदिन शिविरों का आयोजन कर राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में इस संस्था ने नई ख्याति अर्जित की है । इस कार्यक्रम के संचालन में डा. मिलन कृष्ण बरूआ का महत्वपूर्ण योगदान माना जाऐगा । औषधालय का इतिहास बताता है कि विगत ९१ वर्षों में ७ व्यक्तियों ने अध्यक्ष एवं १५ व्यक्तियों ने महामंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली । स्व. नागरमलजी केजड़ीवाल, स्व. बाबु लक्ष्मीनारायण लोहिया, स्व. कामख्यालाल सीकरीया एवं स्व. रामनारायण बावरी के नाम संस्थापकों के रूप में प्राप्त होते हैं ।

स्व. कामख्यालाल जी सीकरीया के व्यापारिक स्थान से औषधालय को प्रारंभ किया गया । संवत् १९८६ में स्व. शिवदत्त रायजी धानुका द्वारा प्रथम आर्थिक सहयोग से गुवाहाटी के मुख्य व्यापारिक क्षेत्र ''फैंसी बाजार'' में एक मकान औषधालय हेतु खरीदा गया एवं संवत् २००७ में मे. श्री रामचन्द्र शिवदत्त राय धानुका प्रदत्त आर्थिक सहयोग से भवन का पुर्ननिर्माण कर बहुमंजिले इमारत का रूप दिया गया । वर्त्तमान में औषधालय की सेवाएं इसी भवन में प्रदान की जाती है । अनुभवी चिकित्सिकों द्वारा निःशुल्क रोग निदान एवं दवाओं का निःशुल्क वितरण भी किया जाता है । उस क्षेत्र में कार्यरत मध्यम व निम्न श्रेणी के परिवारों में यह औषधालय जीवनदायी संस्था के रूप स्थापित हो चुकी है ।

औषधालय में ६ दशक पूर्व कार्यरत चिकित्सक स्व. (डा.) जगदीश चन्द्र चटर्जी का नाम आज भी गुवाहाटी के मारवाड़ी समाज में बहुत ही आदर से स्मरण किया जाता है । इन्होंने जीवन पर्यन्त औषधालब के माध्यम से न सिर्फ एक डाक्टर के रूप में सेवाभावना के साथ अपनी सेवाऐं प्रदान की । औषधालय के इतिहास में डा. जगदीश चन्द्र चटर्जी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है ।

स्व. भोलारामजी सराफ द्वारा अपने पूज्य पिता स्व. शिवदत्त राय जी सराफ की स्मृति में दान दी गयी भूमि पर 'मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल' स्थित है । स्व. केदारमल लोसलिया ने इस भूमिदान हेतु एक सक्रिय एवं प्रेरक भूमिका का निर्वाह किया था । स्व. मदन लाल कांबरा एवं उनके सहयोगियों के नेतृत्व में 'मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल' हेतु उपरोक्त भूमि पर एक बहुमंजिला भवन का निर्माण किया गया । दिनांक २३ अक्टूबर १९८५ को विजयदशमी के शुभअवसर पर उक्त भवन का उदघाटन सम्पन्न हुआ । भवन निर्माण में अनेकों दानदाताओं का सहयोग रहा, जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय है : श्री राम गोपाल केजड़ीवाल, श्री श्यामलाल अग्रवाल एवं स्व. जगदीश प्रसाद सुरेका ।

वर्ष १९८८-८९ की वार्षिक विवरणिका में तत्कालिन महामंत्री ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि '' संस्था द्वारा प्रदत्त सेवाओं की गुणात्मकत्ता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इसे साधनविपन्न तथा साधन संपन्न दोनों तरह के व्यक्तियों के लिए उपयोगी बनाने का विनम्र प्रयास किया गया है ।'' इन प्रयासों से समाज के हर वर्ग के रोगियों के लिए प्रसुतिगृह एक उपयोगी प्रकल्प बन गया । तत्कालीन मेडिकल सुपरिन्टेडेंट डा. मिलन कृष्ण बरूआ ने धनार्जन का लोभ पूर्णतः त्यागकर जनरल वार्ड के रोगियों हेतु अपनी सेवाऐं समर्पित कर दी । डा. अशोक वेरिया पहले से समर्पित भाव से सेवा प्रदान कर रहे थे ।

इस अस्पताल में प्रसुति के अलावा भी महिला रोगों की जाँच की जाती है । लेबोरेटरी विभाग व सोनोग्राफी

आपरेशन करते हुए डाक्टरों की टीम

जच्चा की जांच करते हुए डाक्टर

विभाग भी नियमित रुप से कार्यरत है । वर्तमान में वरिष्ठ चिकित्सक डा. राजेन्द्र प्रसाद हंसारिया इस अस्पताल को प्रधान मेडिकल सुपरिन्टेंडेंट के रुप में अपनी सेवाऐं प्रदान कर रहें है । वर्ष २००२ में अस्पताल का नवीनीकरण कर इसे अधिक सुविधा जनक बनाया गया ।

इस बहुआयमी अस्पताल की सेवाओं एवं उनसे जुड़े सभी समाज सेवी को चन्द पन्ने में उतारना तो संभव नहीं है । मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल भवन के निर्माण में तत्कालिन महामंत्री श्री मदनलाल काबरा, स्व. कुन्दनलाल मित्तल एंव नागरमल गोयनका आदि के श्रमदान का ही प्रतिफल था कि समाज का विश्वास इस संस्था पर होता चला गया ।

'मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल' की सफलता ने समाज के कई लोगों को प्रभावित किया । जिसका परिणाम रहा संस्था की एक ओर एक संतान । ''मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर'' स्व. हरिवक्स जी नन्दलाल जी खाकोलिया द्वारा प्रदत्त भूमि पर आज 'मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर' स्थित है । पूर्व संयुक्तमंत्री श्री किशनलाल बीदासरिया ने इस भूमिदान हेतु एक सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया था । स्व. बेणी प्रसाद शर्मा एवं उनके कई सहयोगियों के नेतृत्व में उपरोक्त भूमि पर बहुमंजिले भवन के निर्माण की आधारशिला रखी गयी एवं निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया । तत्कालीन महामंत्री श्री लोकनाथ मोर, जो वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष हैं का पूर्ण सहयोग रहा । इस निर्माण कार्य में चार वर्ष का समय लगा । श्री प्रमोद सराफ, श्री सज्जन जैन एवं अनेकों सहयोगियों के सहनेतृत्व में इस भवन के कार्यो को पूरा किया गया । इस भवन के निर्माण में अनेक दानदाताओं का सहयोग रहा । जिसमें विशेषरुपेण उल्लेखनीय हैं –श्री राम गोपाल केजड़ीवाल, सत्यनारायण केजड़ीवाल, श्री कैलाश लोहिया, श्री सीताराम भड़ेच, श्री राम गोपाल सुरेका, श्री काशी प्रसाद जालान, श्री ताराचंद पटावरी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री मदन लाल गोयनका चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री ओम प्रकाश गोयनका, श्री लालचंद गोयनका चेरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती नर्मदा देवी भरतिया, श्री रतनलाल प्रदीप कुमार सरावगी, श्री रामस्वरुप कृष्णमुरारी बजाज, स्व. कुन्दनमल चौधरी परिवार एवं सूरजमल जुहारमल सांगानेरिया चेरिटेबल ट्रस्ट ।

दिनांक १० मार्च २००२ को इस भवन का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ । जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन संस्था के अध्यक्ष श्री प्रमोद सराफ ने की एवं असम के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री तरुण गौगोई ने भवन का उद्घाटन किया । उद्घाटन के तुरन्त पश्चात ही इस अस्पताल को आम जनता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया । स्थापना काल से ही डा. शुभांकर अग्रवाल डिप्टी मेडिकेल सुपरिन्टेंडेंट एवं वरिष्ठ शल्य चिकित्सक के रुप में अपनी समर्पित सेवाऐं प्रदान कर रहें है । शल्यचिकित्सा के क्षेत्र में इतिहास बनाती जा रही इस संस्था ने मध्यम श्रेणी वर्ग में एक संजीवनी का कार्य किया है ।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका से जो तथ्य मिले उसमें सबसे महत्वपूर्ण बातों को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए खुद को भी अच्छा अनुभव कर रहा हूँ । तत्कालिन आध्यक्ष श्री प्रमोद सराफ ने अपने सम्बोधन में लिखा है. – ''चिकित्सा सेवाओं के उन्नयन का जो क्रम वर्ष १९८५ में गंभीरता के साथ प्रारंभ किया गया था, वह आज तक अटुट है । हमारी सेवादृष्टि मुख्य रूप से दो उदेश्यों पर केन्द्रित रहती है, एक है : जन साधारण को अति खर्चीली चिकित्सा न्यूनत्तम मुल्य पर उपलब्ध करवाना । दुसरा है : सेवाओं का स्तर एवं पद्धति इस रूपेण रखना कि समाज परिवार भी उन चिकित्सा

महिला वार्ड

प्रसूतिगृह का आधुनिकतम शिशु कक्ष

सेवाओं का लाभ उठाने में संकोच नहीं करें । एक चिकित्सा संस्थान की विश्वनीयता एवं मान्यता के लिए आवश्यक है कि इस संस्थान की सेवाओं का उपयोग समाज के सभी वर्गों द्वारा किया जाए । मारवाड़ी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के चिकित्सा तंत्र का निर्माण भी उन्हीं उद्देश्यों पर आधारित होगा ।''

मारवाड़ी समाज की सेवा का इससे बड़ा उदाहरण ओर क्या हो सकता है, असम के एक समाचार पत्र ''दैनिक असम'' ने ३ जुलाई १९९५ को लिखा है कि 'जहां एक ओर नर्सिंग होमों में डॉक्टरों की गलत चिकित्सा, लापरवाही एवं गैर जिम्मेदारना व्यवहार के चलते रोगियों की मृत्यु हो रही है, वहीं आठगांव स्थित ''मारवाड़ी दातव्य औषधालय'' के डॉक्टरों के अथक प्रयासों एवं रक्तदान के कारण एक मरणासन्न रोगी को नवजीवन प्राप्त हुआ है ।

डॉक्टर श्री मिलन कृष्ण बरूआ ने लिखा : 'मारवाड़ी मैटरनिटी हॉस्पिटल को एक भारतीय नारी की संज्ञा देते हुए कहा कि – इसने जीवन को साहस, स्नेह, धैर्य, जुझारुपन और सच्चाई के साथ जीने की चुनौती को स्वीकारा है।'

समाज की इस संस्था को गुवाहाटी समाज के प्रायः हर परिवार का सहयोग रहा । किसी ने तन-मन से तो किसी न धन से सहयोग दिया, 'श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय', 'मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल', एवं 'मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर' ने न सिर्फ समाज के दिलों में असमवासियों के दिलों में भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है ।

श्री लोकनाथ मोर (मानद अध्यक्ष) : सामाजिक जीवन में कथनी और करनी के पथ पर चलने वाले श्री लोकनाथ मोर वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष हैं । बताते हैं कि यह सेवासंस्थान बहुत ही अच्छी तरह से कार्यरत है । समाज का सहयोग भी बहुत है । आप बताते हैं कि स्व. बेनी प्रसाद शर्मा, स्व. बासुदेव निर्मल व श्री प्रमोद सराफ के कार्यकाल में संस्था ने काफी प्रगति की । साथ ही आप कहते हैं कि समयानुसार काफी परिवर्तन आ चुका है । हमलोग पुराने हो चुके हैं, हमारे विचार पुराने हैं, आज के युवा वर्ग से अपेक्षाकृत सहयोग के अभाव में कई नये कार्य करने में कठनाईयों का सामना करना पड़ता है । संस्था में जो अधिकारी बने उन पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए । संस्था को कई बार कठोर निर्णय लेने होते हैं । ब्लड बैंक, शिशु विभाग, फिजियोथेरोपी एवं आने वाले दिनों में ICU, चिकित्सा पुस्तकालय, तकनीकि सुविधाओं से लेस उच्चस्तरिय जाँचकेन्द्र व निर्सिंग स्कुल भी खोलने की योजना है ।

मानवसेवा का यह कदम गुवाहाटी के समाज बन्धुओं ने ८०-९० वर्ष पूर्व उठाया था, यह अस्पताल उन लोगों की ही देन है । स्वभाव से साधारण दिखने वाले श्री मोर बताते हैं कि संस्था में नये युवकों का समावेश बहुत जरूरी है । अर्थ के साथ श्रम को योजनवध तरिके से जोड़ना होगा । इसी में समाज का भला है । अन्य सामाजिक सेवा क्षेत्र की तुलना में चिकित्सा सेवा का क्षेत्र भिन्न है । यह बात भी हमें समझनी होगी ।

श्री अनील जैना (उपाध्यक्ष) : श्री जैना असम में मारवाड़ी समाज के एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिससे न सिर्फ युवावर्ग को, साथ ही असम में राजनैतिक रुप से इनकी जरुरत महसुस होती है । आप वर्तमान में संस्था के उपाध्यक्ष हैं, बताते हैं कि यह संस्था सही मायने में समाज की धरोहर है । लगभग १०० वर्ष होने को आये, समाज को चाहिए कि इसके विकास में ओर अधिक सहयोग व योगदान देवें । इस क्षेत्र में काफी संभावनाऐं हैं ।

श्री ओम प्रकाश चौधरी (मानद सचीव) : पिछले दो दशकों से आप औषधालय को निरंतर अपनी सेवाऐं प्रदान कर रहें हैं । आप बताते हैं कि सेवा के क्षेत्र में नित्य नये प्रयोग देखने को मिलते हैं । पहले मरीज सिर्फ डाक्टरों पर विश्वास कर दवा लेते थे ओर ठीक भी होते थे । परन्तु आज बैगर जाँच के दवा लेने में संकोच करने लगे । छोटी-छोटी बातों पर जाँच करना पड़ता है । संस्था को नित्य नये-नये उपकरणों से जोड़ना होगा, तभी हमारी उपयोगिता बनी रहेगी ।

श्री प्रमोद सराफ : आप अ.भा.मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक अध्यक्ष एवं औषधालय के पुर्व अध्यक्ष रह चुके है। लगातार कई वर्षों की सक्रिय सेवा दे चुके श्री सराफ में आज भी कार्य करने की वही उर्जा देखने को मिलती है। अपने सहयोगियों को साथ लेकर चलने की अदभुत क्षमता रखने वाले श्री सराफ बताते हैं कि संस्था को न सिर्फ व्यवस्थित ढांचे में डालने की जरुरत है आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए कई पुराने विचारों में परिवर्तन भी कर कुछ कठोर निर्णय लेने होगें । अपने कार्यकाल के सहयोगी श्री सज्जन जैन (पूर्व महामंत्री), श्री ओमप्रकाश चौधरी (वर्तमान महामंत्री), श्री कृष्णकुमार लोहिया व श्री राम स्वरूप खाकोलिया के कार्यों का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि समाज में दान दाताओं की कमी नही है। दानदाताओं के साथ-साथ समाज को कुछ ऐसे समर्पित कार्यकत्ताओं की जरुरत हमेशा बनी रहती है । संस्था को सन् १९८८-८९ में आर्थिक रुप से साहयता प्रदान करने में श्री ओम प्रकाश चौधरी की महत्वपूर्ण भूमिका का अल्लेख करते हुए बताते हैं कि प्रतिदिन प्रायः ४-५ घंटों का समयदान कर वार्षिक दानदाताओं की संख्या एवं दानराशि में वृद्धि हेतु अथक प्रयास किये । स्व. वासुदेव निर्मल के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया था, उनके सहयोगी रहे श्री प्रभुदयाल जालान एवं श्री विश्वनाथ गोयल । इसी अभियान के परिणाम स्वरूप औषधालय प्रकल्प : ''मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल'' का कायाकल्प संभव हुआ । श्री सज्जन जैन का जिक्र करते हुए आपने बताया कि मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल भवन के जीर्णोद्धार कार्यक्रम के प्रणेता थे आप । इन्हीं के निर्देशन में यह कार्यक्रम स्व. रामवतारजी सराफ के सहयोग से सफलता पूर्वक सम्पादित हुआ । मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर के निर्माण में भी आपने महत भूमिका का निर्वाह किया । गुवाहाटी शहर के प्रतिष्ठित अद्योगपति होने के बावजुद आपने यथेष्ट समयदान दिया, एक-एक कर संस्था के सभी पूर्व एवं वर्त्तमान कार्यरत लोगों को याद करने लगे । शायद यही कारण है कि सभी लोग इनको याद करते हैं । खुद संस्था के लिए क्या किये थे, बातों-बातों में कुछ भी नहीं बताया बस सारा काम इसने किया-उसने किया ये बताते रहें । यह बात लिखना पड़ता है कि श्री प्रमोद सराफ जैसे व्यक्तित्व को पाकर हमारा समाज धन्य हो गया । जहाँ संस्था को वयोवृद्ध समाजसेवी स्व. गणपतराय धानुका का सदैव आशिर्वाद प्राप्त था । असम के सैकड़ों परिवारों का सहयोग भी हमेशा से इस संस्था को मिलता रहा है। शिलांगवासी श्री रामगोपाल सुरेका के योगदान को भुला देना संभव नहीं है। स्व. लक्ष्मीनारायण बाजोरिया, स्व. रामकुमार मोर, श्री गौरीशंकर जालान, स्व. मुरलीधर शर्मा, स्व. केदारमलजी ब्राह्मण, स्व. गोविन्द प्रसाद सिवेटिया, श्री राम निरंजन गोयनका, श्री श्याम सुन्दर गोयनका, श्री अजीत कुमार बेताला, श्री नानक राम गोयनका के योगदानों को भी नहीं भुलाया जा सकता । संस्था में कई ऐसे व्यक्तित्व हैं जो संस्था के किसी पद पर न रहते हुए भी अपना योगदान देते रहे, जिनमें श्री पवन अग्रवाल एवं श्री अरूण कुमार बजाज का नाम लिया जा सकता है । वैसे तो शहर के ही नहीं असम प्रदेश के कई लोगों का उल्लेखनिय योगदान रहा है, फिर भी कुछ लोगों का नाम जिक्र करना जरूरी समझता हूँ जिनमें श्री काशी प्रसाद जालान, श्री प्रभुदयाल जालन, श्री जगदीश प्रसाद केजड़ीवाल, श्री राम पाल सीकरिया, श्री कैलाश काबरा, श्री कृष्ण कुमार लोहिया, श्री संतोष जैन, श्री विनोद मोर, श्री पवन सीकरिया, श्री अनील जैना, श्री ओम प्रकाश चौधरी, श्री कैलाश लोहिया, श्री नवल किशोर मोर, श्री मनोज अग्रवाल, श्री भंवर लाल लाहोटी, श्री पुरूषोत्तम अजीतसरीया, श्री प्रमोद जैन के अलावा भी सैकड़ों कार्यकर्ताओं का सहयोग इस संस्था को हमेशा मिलता रहा है । इस संस्था को न्यायमूर्ति श्री

धरोहर–३

संस्था के पदाधिकारी

अध्यक्ष
लोकनाथ मोर

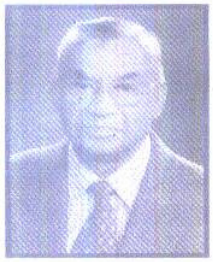

उपाध्यक्ष
रामगोपाल हरलालका

उपाध्यक्ष
अनिल जैना

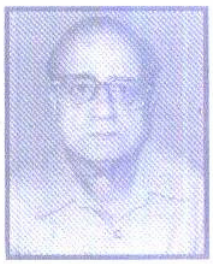

कोषाध्यक्ष
के.पी. जालान

संयुक्त मंत्री
लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

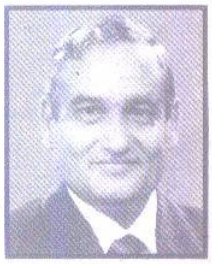

संयुक्त मंत्री
ओमप्रकाश खण्डेलवाल

बनवारी लाल हंसारिया एवं न्यायाधीश डा. भगवती प्रसाद सराफ का भी सहयोग रहा है ।

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय का यह संक्षिप्त इतिहास आदरणीय श्री प्रमोद सराफ, श्री लोकनाथ मोर, श्री अनील जैना व श्री ओमप्रकाश चौधरी के विशेष सहयोग से लिखा गया है । संभवतः कुछ त्रुटि हो, इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । इस संक्षिप्त इतिहास को लिखने के लिए संस्था की स्मारिका २००२ का विशेष सहयोग लिया गया है । स्मारिका के सम्पादक श्री राजकुमार गाड़ोदिया का भी विशेष आभार व्यक्त करता हूँ । –शम्भु चौधरी

सम्पर्क पता : श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, हेमबरूआ रोड, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी–781001 फोन : 0361-2514641, मारवाड़ी मटेरनिटी हॉस्पिटल, एस. जे. रोड, आठगांव, गुवाहाटी–781008 फोन : 2541201/202, मारवाड़ी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर, एस.जे.रोड, आठगांव, गुवाहाटी–781008, फोन : 2602738/39, फेक्स : 91-361-2512563

लघुकथा : लघुता से प्रभुता मिले

सिक्खों के पांचवें गुरू अर्जुनदेव जी जब चौथे गुरू के अखाड़े में शामिल हुए तो उन्हें छोटे छोटे काम करने को दिए गए, जिनमें जूठे बरतन साफ करना भी शामिल था । अर्जुनदेव जी को जो भी काम बताया जाता उसे वे बड़ी लगन से पूरा करते थे। छोटे से छोटा काम करने में भी उन्हों ने कभी संकोच अनुभव नहीं किया। न इस से उन में कभी हीन भावना ही पैदा हुई।

अन्य शिष्य सत्संग का आनंद लेते थे, परंतु वे आधी रात तक सभी छोटे कार्यों को पूरा कर के ही विश्राम करते थे । अन्य लोगों में यह धारणा घर कर गई थी कि गुरू जी अर्जुनदेव को तुच्छ समझते हैं । परंतु वे लोग यह नहीं जानते थे कि गुरू में आदमी की सच्ची परख है और वे मानव सेवा को सब से अधिक महत्व देते हैं । समाधि लेने से पूर्व गुरू जी ने काफी सोच विचार के बाद अपने शिष्यों में से एक को उत्तराधिकारी चुन लिया और उसके नाम अधिकार पत्र लिख कर बक्स में बंद कर दिया । चौथे गुरू की मृत्यु के बाद वह अधिकार पत्र खोल कर देखा गया तो पता चला कि उन्होंने अपना उत्तराधिकारी अर्जुनदेव को बनाया था ।

अन्य शिष्यों ने तभी सेवा के महत्व को समझा । पांचवें गुरू अर्जुनदेव जी ने अपने गुरु की आशाओं के अनुरूप कार्य कर के काफी ख्याति अर्जित की ।

वियतनाम यात्रा

व्यापार एवं निवेश का नया तीर्थस्थल

–सीताराम शर्मा

भारत चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रतिनिधिगण वियतनाम में भारत के राजदूत श्री लाल टी. मुयाना के साथ

वियतनाम के नाम से ही एक ऐसे देश की तस्वीर दिमाग में उभरती है जो अमेरिका के साथ युद्धरत रहा है । लेकिन यह बात सत्तर के दशक की है । २१वीं सदी का वियतनाम एकदम भिन्न है । प्रायः राजस्थान के बराबर क्षेत्रफल (३ लाख ३१ हजार वर्ग कि०मि०) के वियतनाम की आबादी साढ़े आठ करोड़ है साक्षरता ९५ प्रातिशत एवं औसत आयु करीब ७२ वर्ष ।

चीन की तरह कम्युनिष्ट वियतनाम में प्रायः खुली बाजार अर्थव्यवस्था है जिसके चलते पिछले कई वर्षों से औसत प्रगति दर आठ प्रतिशत से अधिक रही है । जापान, कोरिया, तैवान, सिंगापुर, यहाँ तक कि अमेरिका द्वारा वियतनाम में निवेश की एक होड़ सी लगी है । अभी तक प्रायः ३१ बिलियन डालर का निवेश किया है, जिसमें भारत का स्थान करीब ७ बिलियन डालर के साथ १३वाँ है । इसी वर्ष भारत की तीन बड़ी कम्पनियों ओ०एन०जी०सी०, टाटा एवं एस्सार स्टील ने बड़े प्रोजेक्ट हाथ में लिये है ।

गत माह भारत चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल (रूपा एंड कं०) के नेतृत्व में एक २१ सदस्यीय व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने ११ से १८ अगस्त तक वियतनाम की यात्रा की । पूर्वी भारत के कोलकाता स्थित प्रतिष्ठित एवं प्रमुख अद्योगपति – सर्वश्री हरिप्रसाद बुधिया (पैटन इंटरनेशनल), सज्जन भजनका (सेंचुरी प्लाई), बसन्त कुमार अग्रवाल-प्रमोद कुमार खेमका (मानकसिया लिमिटेड), हरिप्रसाद कानोडिया (श्रेई इंटरनेशनल), घनश्याम दास अग्रवाल – महेश कुमार अग्रवाल (आधुनिक कारपोरेशन लि०), संतोष रूंगटा (रूंगटा ग्रुप आफ इंडस्ट्रीज लि०), बृज भुषण अग्रवाल (श्याम ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज), मनीष अग्रवाल-साकेत अग्रवाल (एम एस पी स्पांज आयरन लि०), कृष्ण कुमार चिरीमार (रघुनाथ एक्सपोर्ट प्रा० लि०), गोविन्द बेरीवाल-ललित बेरीवाल (श्याम स्टील), अशोक आयकत (सोनोडाईन टेलिविजन क०लि०), राम अवतार पोद्दार (वंडर डेकोर प्रा०लि०), सुनील अग्रवाल (प्रताप सिंथेटिक्स लि०), इस दल में शामिल थे । मुझे इस प्रतिनिधिमंडल में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । भारत-वियतनाम मैत्री समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गीतेश शर्मा की इस यात्रा के संयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

हनोई हवाई अड्डे पर आशोक जी सारडा ने हमारा स्वागत किया । अशोक जी २१ वर्षों से वियतनाम में हैं एवं इनके तीन भारतीय रेस्तरॉं हैं । वियतनाम में शाकाहारी भोजन की कुछ असुविधा है हालांकि बहुत ही स्वादिष्ट फलों एवं दूध, दही की भरमार है । लेकिन आशोक जी के कारण हमें मनपसंद मारवाड़ी खाना - दाल, चावल, कड़ी फुलका रोज खाने में मिला । वियतनाम में भारतीयों की संख्या बहुत सीमित है, मारवाड़ी तो गिने चुने घर हैं ।

राजधानी हनोई ने बहुत प्रभावित नहीं किया लेकिन "हो ची मिन्ह सिटी" (जिसका पुराना नाम सैगोन है) की चमक-दमक जबरदस्त थी । हो ची मिन्ह सिटी भारत के मुम्बई की तरह वियतनाम की व्यापारिक राजधानी है । शहर बहुत साफ सुथरा सुन्दर है । चौड़े रास्ते, आलीशान बिल्डिंग, भव्य होटल, मॉल, नाईट क्लब, चमचमाती कारें, जगमगाते नियोनसाईन किसी युरोपीय शहर की याद दिलाती, कहीं से भी नहीं लगता था कि आप एक कम्युनिष्ट देश में हैं । किसी ने कहा कि "हमारे बंगाल के मंत्री यहाँ नहीं आते क्या ?"

वियतनाम का इतिहास स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का एक इतिहास रहा है । पहले करीब एक हजार वर्षों तक चीन ने वियतनाम पर राज किया इसके बाद करीब ८० वर्षों तक १८५८ से १९४५ तक फ्रांस का प्रभुत्व रहा । द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वियतनाम पर जापान का कब्जा रहा । हालांकि १९४५ में वियतनाम ने स्वतंत्रता घोषित की लेकिन उसे १९५४ तक फ्रांस के विरूद्ध एवं उसके बाद १९७५ तक अमेरिका के खिलाफ लड़ाई लड़नी पड़ी ।

वर्षों की गुलामी एवं स्वतंत्रता की लड़ाई के बावजूद भी वियतनाम ने किसी के प्रति कोई कटुता या कहीं भी हीन अथवा निराशा की भावना देखने को नहीं मिली । यह पूछने पर क्या आपलोग अमेरिका के आक्रमण और उसकी बर्बरता को भूल गये हैं उनका जबाव बड़ा यथार्थवादी था, "हम भूले नहीं बल्कि हमने उनको क्षमा कर दिया है" ।

१९८६ में वियतनाम ने आर्थिक सुधार की नई नीति "दोई मोई" की घोषणा की इसके अंतर्गत विदेशी निवेशकों के लिए वियतनामी बाजार खोला गया एवं आर्थिक नीतियों में भारी सुधार किये गये । जिसके नतीजे हमें देखने को मिले । वियतनाम जो अनाज आयात करता था आज आत्मनिर्भरता से आगे निकलकर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चावल का निर्यातक है । नब्बे के दशक से लगातार नौ प्रतिशत से अधिक की विकास दर के साथ वयितनाम ने एक बड़ी तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था का रूप ले लिया है ।

वियतनाम एवं भारत के बहुत ही घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। हमने भारत के प्रति सभी जगह आत्मीयता महसूस की । वियतनाम चाहता है कि भारत के साथ उसके वाणिज्यिक संबंध और मजबूत हो । भारतीय निवेश का वियतनाम स्वागत करता है । ★

लघुकथा : **जब आवै संतोष धन...**

आचार्य तुलसी के नेतृत्व में एक बार जैन धर्मावलंबी तेरापंथी साधु संघ उत्तरांचल में भ्रमण कर रहा था । प्रति दिन पांच से दस मील तक पैदल यात्रा की जाती थी ।

एक दिन एक छोटे गांव में ठहरने का निश्चय हुआ । गांव की सीमा पर मुखिया मिला । उसने विनय की कि वे लोग अगले गांव में चले जाएं क्योंकि उसी दिन गांव से एक अन्य संत मंडली की विदाई हुई थी जो एक सप्ताह तक वहां ठहरी थी ।

उस की बात सुन कर आचार्य जी ने मुसकरा कर कहा, "हम लोग निश्चित दूरी तय कर के ठहरते हैं । हम गांव के बाहर ही ठहर जाएंगे । आप चिंता न करें ।" आचार्य तुलसी के निश्चय को सुन कर मुखिया ने आग्रह किया कि वे गांव में ही चलें । तत्पश्चात मुखिया ने चारपाइयों, बिस्तरों व खाने पीने की आवश्यकता के बारे में पूछा । आचार्य जी ने उत्तर दिया, "हम लोग जैन संत हैं, चारपाई व बिस्तरों का प्रयोग नहीं करते । जो खाना तैयार किया जाता है उसे भी हम नहीं लेते ।"

इस पर मुखिया बोला, "आप लोगों के लिए दूध का प्रबंध कर देंगे ।"

आचार्य जी ने कहा, "हम लोग रात में कुछ भी नहीं खाते । रात्रि को विश्राम करेंगे । सबेरा होते ही चल देंगे ।"

वह रात उन्हों ने विद्यालय के भवन में बिताई और मंगली पाठ सुनाते हुए कहा, "हमें अपनी इच्छाएं इतनी कम रखनी चाहिए कि उन्हें पूरा करने में किसी दूसरे को कष्ट न देना पड़े ।"

★ वृद्धावस्था में शारीरिक समस्याएँ एवं समाधान

– डॉ. सिद्ध गोपाल, वाराणसी

सच पूछें, अगर शरीर को सुन्दर एवं सारे जीवन को सुखद बनाना है तो शरीर को बचपन से स्वस्थ एवं प्रसन्न रखने का अभ्यास डालना पड़ेगा । जवानी में तो अपनी गलत आदतों के कारण बीमारियों के झेल लेता है, लेकिन जब पचास की उम्र को पार करता है तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है । नतीजतन बीमारियाँ घेरना प्रारम्भ कर देती हैं । बचपन से अगर व्यायाम, प्रातः भ्रमण या योग का अभ्यास नहीं डाला गया तथा बुरी आदतों जैसे पान, पान मसाला, खैनी, सुर्ती, सुपाड़ी, सिगरेट, शराब आदि के सेवन से अपने को नहीं बचा के रखा गया, तो वृद्धावस्था में गलत आदतों से छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन होता है । फिर आदमी सोचने लगता है कि अगर पान, पान मसाला, सुर्ती, सिगरेट, शराब छोड़ना है तो शरीर ही छूट जाय । इस हद तक अपनी आदतों का गुलाम हो जाता है । उसके सुखद जीवन जीने की संभावना ही समाप्त हो जाती है । ऐसे लोगों को मैंने देखा है, कष्ट पा लेंगे, दवा खा-खा कर जीते रहेंगे, लेकिन अपनी बुरी आदतों से छुटकारा पाने का प्रायास नहीं करेंगे । डॉक्टर-वैद्य से कहेंगे आप दवा दीजिए लेकिन किसी चीज को छोड़ने केलिये मत कहिये । ध्यन रखें परहेज करना सबसे बड़ी दवा है । जिन लोगों ने दृढ़ निश्चय करके गलत व्यसनों को छोड़ा उनका गिरता स्वस्थ्य भी संभल गया तथा दवाओं से काफी हद तक छुटकारा मिला ।

हम अपनी इन्द्रियों के गुलाम हो गये हैं । इन्द्रियों को अपना गुलाम बनाना अत्यन्त ही कठिन कार्य है । यह कार्य तो त्याग, तपस्या तथा कठिन साधना से ही संभव है, लेकिन पूरी तरह अगर इन्द्रियों को गुलाम नहीं बना सकते तो कुछ हद तक तो इन्द्रियों का दुरूप्रयोग रोक सकते हैं । अपने मन को समझाने की आवश्यकता है कि जीने के लिए क्या पान, पान मसाला, सुर्ती, सिगरेट, शराब आदि का सेवन आवश्यक है ? अगर एक भी व्यक्ति इन चीजों से अपने को बचा कर सुखद एवं निरोगी जीवन जी सकता है, तो हम क्यों नहीं अपने को बचा सकते ? बस, इसमें मन के संकल्प की आवश्यकता है । इन बुरी आदतों को छोड़ने के कारण प्रारम्भ में कुछ दिनों तक उसेर उठती है । अगर उस उसेर के वेग को रोक लिया तो फिर हमेशा के लिए वे छुट जायेंगी ।

वृद्धावस्था की बीमारियां क्या हैं ? कुछ बीमारियाँ तो हम जवानी से लेकर आते हैं, लेकिन कुछ बीमारियाँ वृद्धावस्था के कारण हमें घेर लेती हैं । कारण शरीर के अंग शिथिल पड़ने लगते हैं । ईश्वर या प्रकृति हमें संदेश देती है कि वृद्धावस्था आ रही है, संभल जाओ, जैसे बाल पकने लगते हैं, शरीर में झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं तथा शरीर का चमड़ा लटकने लगता है । दाँत भी टूटने लगते हैं तथा लोग वेदांती (बिना दाँत के) हो जाते हैं । आँखों की रोशनी घटने के कारण मोटा चश्मा लगने लगता है। कानों से कम सुनाई देने के कारण श्रवण यंत्र का उपयोग करना पड़ता है, चलने में दिक्कत के कारण लाठी का सहारा लेना पड़ता है । हाजमा भी कमजोर हो जाता है । चलने तथा कहीं जाने आने में तकलीफ होने लगती है कारण घुटने जवाब देने लगते हैं । पौरूष ग्रंथि के कारण पेशाव खुल कर पूरा नहीं होती, पेशाव की धारा भी पतली हो जाती है । पेशाव करने की तीव्र इच्छा के कारण कभी-कभी कपड़े में पेशाब हो जाता है, लेकिन पेशाब करने जायेंगे तो मात्रा ज्यादा नहीं निकलेगी । सर्दी, खांसी, सास फूलना, ब्लड प्रेशर होना आदि के कारण दिल जवाब देता है । बाईपास कराना पड़ता है आदि आदि । जब दर्पण के सामने खड़े होते हैं तो अपनी ही जवानी का सुदर चेहरा बदसूरत दिखने लगता है । इस प्रकृति के संदेश की हम अवहेलना करते हैं । बालों को काला करके हम कम उम्र के जवान दीखने का प्रयास करते हैं । गोल्डेन फ्रेम का चश्मा लगाकर अपना रूप बढ़ाते हैं, दाँतों की बतीसी लगाकर अच्छे दीखने का प्रयास करते हैं । बीमारियों से बचने के लिए या तो दवा का सेवन करते हैं या आवश्यकता हुई तो ऑपरेशन भी कराते हैं ।

एक गलत धारणा मन में बैठ गई है कि जीवन तो हमें निश्चित आयु के लिए मिला है, हमें गिनती के श्वास मिले हैं, अतः चाहे जितना परहेज से रहें, निश्चित आयु पर मरना तो निश्चित है । यह एकदम गलत धारणा है । हम अपने आच्छे आहार-विहार से अपनी आयु बढ़ा सकते हैं तथा बुरी आदतों के कारण काल के गाल में जल्दी समा सकते हैं । हम अपने ही देश में देखें कि पहले एक स्त्री १०-१२ सन्तान पैदा करती थी और सबके-सब मर जाते थे । अब कोई स्त्री दो सन्तान से ज्यादा पैदा करना नहीं

चाहती और दोनों जीवित रहते हैं । हमारे देश की औसत आयु पहले ३६ वर्ष थी, जो बढ़कर अब ६० वर्ष के लगभग हो गई है । विश्व के अन्य अनेक देशों में भी औसत आयु बढ़ गई है । कारण बच्चे अब पैदा होने के समय नहीं मरते । कारण योग्य चिकित्सक एवं उपकरणों की सुविधा अस्पतालों में हो गई है । खाने पीने के प्रति सजगता बढ़ी है कि अभक्ष्य भोजन का सेवन नहीं करेंगें । रोगों के जाँच की सुविधा बढ़ जाने के कारण रोगों की इलाज ठीक से हो पाता है, शल्य चिकित्सा इतनी उन्नत हो गई है कि बाईपास सर्जरी किसी जमाने अत्यन्त कठिन मानी जाती थी, अब तो आम बात हो गई है । आदमी प्रातः भ्रमण, शुद्धपानी पीना, योग करना, हरी सब्जी का सेवन, फलों का सेवन अधिक करने लगा है । प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों में इलाज की सुविधा बढ़ जाने के कारण असाध्य समझे जाने वाले रोग भी नियंत्रण में रहने लगे हैं । इसे यों समझें कि अगर रोग है तो इलाज भी है, बशर्ते कि सही समय पर इलाज करा लें । रोग को इस हद तक नहीं बढ़ने दें कि वह लाइलाज हो जाय । कैंसर भी प्राथमिक अवस्था में पूरी तरह ठीक हो जाता है । इलाज के प्रति लापरवाही रोग को गहरा करती जायेगी और तब रोग भी लाइलाज हो जायेगा । रोग को न तो छिपा कर रखें और न उसके इलाज के प्रति लापरवाही करें । यह विश्वास रखें कि रोग है, तो इलाज भी है चाहे वह ऐलोपैथी में हो, आयुर्वेद में हो, होम्योपैथी में हो या प्राकृतिक चिकित्सा में । अपने रोग के ठीक होने के लिए अपने विश्वास में कमी न आने दें । आपको याद होगा पहले के जमाने में प्लेग, हैजा, चेचक, पोलियो आदि से गाँव के गाँव तबाह हो जाते थे । पोलियो से मरते कम थे लेकिन अपंग ज्यादा हो जाते थे, लेकिन आज विज्ञान के कमाल ने इन बीमारियों का लगभग नामोनिशान ही सारी दुनिया से मिटा दिया है । अच्छी जाँच सुविधा, अच्छी दवाएँ, उन्नत शल्य चिकित्सा, स्वास्थ्य के प्रति सजगता, फलों एवं हरी सब्जी का बढ़ता हुआ सेवन, प्रातः भ्रमण एवं योग आहार को औषधि बनाना, नियमित दिनचर्या आदि ने हमारे जीवन को दीर्घायुष्य प्रदान किया है तथा जीवन को कष्टमुक्त करके सुखद जीवन जीने की राह दिखाई है ।

हमारे देश में ८० वर्ष की आयु के बाद जिनका स्वर्गवास होता है, उनको हम पूर्णायु प्राप्त होने की संज्ञा देते हैं । लेकिन इससे कम आयु में मरने पर अल्पायु में मरना मानते हैं । हमारे ऋषि हमें 'शतं जीवेत्' याने सौ वर्ष तक जीने का आशीर्वाद देते हैं । इतना ही नहीं, हमारी सारी इन्द्रियाँ भी १०० वर्ष तक ठीक से काम करती रहें, यह हमारे ऋषियों की कामना है -

जीवेद शरदः एवं शृणुयाम शरदं शतम् ।

अगर हमारी स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढ़ती जायगी तो औसत आयु के बढ़ना निश्चित है । अतः इस भ्रांति को मन से निकाल दें कि हम निश्चित आयु एवं निश्चित सांसों के साथ पैदा हुए हैं । प्रत्येक प्राणों की इच्छा होती है कि मेरा मरण सहसा हो । न तो कष्ट पाना चाहता है और न कष्ट देना चाहता है न अपने शरीर को सड़ाना चाहता है और न अपने परिवार में उपेक्षित जीवन जीना चाहता है । स्वयं मैंने अनुभव किया है कि नियमित प्रातः भ्रमण एवं यौगाभ्यास करने वाले सहसा ही प्राण त्याग करते हैं । बिस्तर पर सड़ते नहीं । नरक कहीं होती नहीं, बिस्तर पर अपने ही पेशाब टट्टी का अशक्त होकर पड़े रहना ही नरक भोगना है । एक ही अपराध की सजा दो जगह नहीं भोग सकता । यहाँ पृथ्वी पर भी भोंगे और नरक में भी भोंगे । स्वर्ग और नरक काल्पनिक हैं, साथ ही लालच एवं भय के प्रतीक हैं । वृद्धावस्था में सुखद जीवन जीने के लिए निश्चित दिनचर्या होनी चाहिए । दिनचर्या का स्वरूप नीचे दिया जा रहा है-

१. प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में याने ४ बजे या अधिक से अधिक सूर्योदय के पहले उठने का अभ्यास डालना । ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए रात को सोने का समय भी जल्दी याने १०-११ बजे के बीच सो जाना चाहिए । अंग्रेजी की कहावत "early to bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise" को याद रखें ।

२. प्रातः उठने पर कुल्ला करके रात में रखे बासी पानी का २ से ३ गिलास सेवन करें । २४ घंटे में शरीर में चार लीटर पानी जाना चाहिए । पानी से पेट साफ रहेगा तथा मूत्र होने के कारण शरीर के विकार निकलते जायेंगे ।

३. नित्य स्वस्थ वायु में प्रातः भ्रमण करें । कम से कम पाँच किलोमीटर याने एक घंटे तक प्रातः भ्रमण करें । प्रातः भ्रमण किसी खुले स्थान में करें ताकि स्वच्छ एवं शुद्ध वायु का सेवन हो सके । ★

★ वृद्धावस्था के रोग और उनसे बचने का उपाय

-डॉ. रमन सिंह, वाराणसी

वृद्धावस्था में रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण हो जाती है। जिस अवस्था में भी प्रतिरोधक क्षमता में कमी आयेगी। व्यक्ति कई प्रकार के रोगों का शिकार हो जायेगा । अक्सर वृद्धावस्था में पौरुष ग्रंथि परेशान करती है । इस बीमारी में पेशाब करने की इच्छा इतनी तीव्र हो जाती है कि अगर तुरन्त नहीं किया तो कपड़े में पेशाब सरक कर निकल जायेगा । पेशाब की मात्रा ज्यादा नहीं होती, पेशाब की धार भी पतली हो जाती है तथा पेशाब निकलता है । पौरुष ग्रंथि के रोगी को पेशाब करने में समय भी ज्यादा लगता है । इस रोग के निवारण के लिए तीन उपाय हैं- पहला आप एक यौगिक क्रिया करना प्रारम्भ कर दें । यह क्रिया कम से कम पच्चीस बार करें । इस क्रिया के कारण गुदा एवं लिंग की जो नसें कमजोर हो जाती हैं, उनमें मजबूती आ जाती है तथा रोगी को रोग से राहत मिलती है । दूसरा उपाय किसी योग्य चिकित्सक की राय से दवा लेना प्रारम्भ कर दें, उससे आराम मिलेगा । ये दवाऐं निरापद हैं, अतः आजीवन ली जा सकती हैं । जब यौगिक क्रिया एवं दवा से आराम न मिले तो तीसरा उपायः ऑपरेशन द्वारा इस रोग से छुटकारा पाया जा सकता है । नेत्र ज्योति कमजोर हो जाती है । चश्मा तो लगभग ४० वर्ष की उम्र में ही लग जाता है, लेकिन नेत्रों की यौगिक क्रिया से चश्मों का पावर जल्दी-जल्दी नहीं बढ़ता तथा मोतियाबिंद होने से या तो बच जायगा या विलम्ब से होगा । नेत्रों से संचालन को ऊपर नीचे, दाहिने बायें एवं गोलाकार दोनों तरफ घुमाना चाहिए । यह क्रिया नित्य क्रम से कम से कम दस बार करने से नेत्र रोगों से बचा जा सकता है । यह क्रिया किसी योग्य प्रशिक्षक से सीख कर करें तो ज्यादा अच्छा होगा ।

आजकर मधुमेह ऐसी आम बीमारी हो गई है कि आदमी जवानी की उम्र से ही इस बीमारी से ग्रस्त हो जाता है । हमारे देश में मधुमेह एवं ब्लड प्रेशर के मरीज करोड़ों की तादाद में मिलेंगे । मधुमेह ऐसी बीमारी है कि प्रायः पता ही नहीं चलता कि वह इस बीमारी से रोग ग्रस्त है । मधुमेह रोग के निम्नलिखित लक्षण हैं -

बार-बार पेशाब लगना, अधिक प्यास लगना, अधिक भूख लगना, बिना किसी कारण वजन का घटना, घाव इलाज के बावजूद ठीक नहीं होना, लम्बाई के अनुसार वजन अधिक होना, कम उम्र में धुँधला दिखाई देना, नपुंसकता और सेक्स सम्बन्धी शिकायत एवं परिवार के सदस्यों में मधुमेह का पाया जाना ।

जैसे लकड़ी में घुन लकड़ी को खोखला कर देती है, ठीक उसी प्रकार मधुमेह भी शरीर को खोखला कर निकम्मा बना देता हैं । मधुमेह के रोगी में जीवन जीने का आनन्द ही समाप्त हो जाता है, स्वादिष्ठ और मीठी चीजें वह खा नहीं सकता और उसको ऐसा महसूस होता है कि उसके जीवन का रस ही सूख गया । मधुमेह के रोगी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि यह बीमारी नहीं है । कारण यह बीमारी होती तो इलाज होता और ठीक हो जाती लेकिन मधुमेह का रोगी रोग के ठीक होने की बात नहीं कहता, वह कहता है कि नियंत्रण में है । याने एक बार रोग हो जाय तो आपके खानपान, रहन, औषधि उपचार से, प्रातः भ्रमण से, योगाभ्यास से यह नियंत्रण में रहेगा । रोगी की थोड़ी असावधानी पुनः उसको मधुमेह का रोगी बना देगी । अतः मधुमेह के रोगी को अगर जीवन का सुख लेना है तो सर्वप्रथम रोगी को प्रातः भ्रमण प्रारम्भ कर देना चाहिए । यह भी देखा गया है कि ५ से १० किलोमीटर तेजी से टहलने वाले को इस रोग से मुक्ति मिली है । कारण प्रातः भ्रमण से शरीर में इन्सूलिन अपने आप बनने लग जाता है । मधुमेह का रोगी मीठी चीजों के सेवन से परहेज करें और योग्य चिकित्सक की सलाह से दवा तथा इंजेक्शन का सेवन तो करे ही, निश्चित दिनचर्या का पालन भी अवश्य करें । मधुमेह के साथ ब्लडप्रेशर की बीमारी भी प्रायः लोगों में देखने को मिलती है और हमारे देश में ही करोड़ों की आबादी ब्लड प्रेशर के रोग से ग्रसित होगी। ब्लडप्रेशर का अधिक होना तो नुकसानदेह है ही, आवश्यकता से कम होना भी अधिक नुकसानदेह है । ब्लडप्रेशर का मुख्य कारण धमनियों में कोलेस्ट्राल का जमा होना है । कोलेस्ट्राल के जमा होने से धमनियों का छेद छोटा हो जाता है और रक्त का प्रवाह धीमा या अवरुद्ध हो जाता है। रक्त का प्रवाह जब भी धीमा या अवरुद्ध होगा, शरीर में ब्लडप्रेशर होगा । ब्लडप्रेशर के रोगी को नमक का सेवन कम से कम करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर योग्य चिकित्सक से परामर्श कर दवा भी लेनी चाहिए । यौगिक क्रियाएँ भी ब्लडप्रेशर को नियंत्रित रखने में सहायक होती है ।

दाँत बत्तीस होते हैं । ये जन्म के बाद आते हैं, आते वक्त तकलीफ देते हैं एवं वृद्धावस्था में जब टूटने लगते हैं, तो बड़ी तकलीफ देते हैं, जवानी में भी दाँतों में तकलीफ होती है तो पूरा शरीर बेकार हो जाता है । एक दाँत के प्रसिद्ध चिकित्सक को मैंने उलाहना दिया कि दाँत के चिकित्सक सबसे ज्यादा अविश्वसनीय होते हैं । बाकी के चिकित्सकों से तो परहेज, प्रातः भ्रमण एवं 'योग' करने से पिंड छूट जाता है, लेकिन दाँत के चिकित्सक से पिण्ड नहीं छूटता । तो उन्होंने एक अत्यन्त ही कारगर नुख्सा बताया । उससे बहुत राहत मिली । एक तो ब्रश को पेष्ट लेकर ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर करें, ज्यादा कड़े ब्रश से न करें, सबसे साफ्ट ब्रश ले लें और कुछ देर तक ऊपर-नीचे करने के बाद कुल्ला कर लें एवं उसके बाद एक अंगुली पर उसी पेस्ट को लेक अपने मसूड़ों एवं दाँतों को मलें । भीतर के मसूड़ों को भी अंगुली एवं अंगूठे से मलें । इस क्रिया के करने के बाद दाँतों के डाक्टर को दिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ी । दाँतों में भोजन के कण को फँसा न रहन दें, खासकर रात में सोने के पहले किसी तिनके से अवश्य साफ कर लें । दाँतों की सुरक्षा के लिए पान, पान मसाला, सुर्ती, सुपारी या अन्य कड़ी चीजों के सेवन से दाँतो को बचायें । दाँत मोती की तरह चमकीले रहेंगे । दोनों समय मंजन कर लें तो ज्यादा उपयोगी रहेगा । रात को मंजन के उपरान्त किसी खाद्य सामग्री का उपयोग न करें । फिर भी तकलीफ रहे तो योग्य दंत चिकित्सक से परामर्श लें ।

चमड़े में झुर्रियाँ पड़ना या दरार पड़ना भी रुक सकता है । इसके लिए पुरे शरीर को स्वस्थ रखना आवश्यक होगा । नियमित प्रातः भ्रमण एवं योग तथा आहार-विहार में नियत्रण आपके शरीर की ऊर्जा बनाये रखेंगे और शरीर जितना ही सक्रिय एवं चिन्तामुक्त रहेगा, झुर्रियाँ कम से कम पड़ेंगी । आप अस्सी वर्ष के ऐसे लोगों को देख सकते हैं । उनकी आयु का अनुमान लगाने में भूल होना स्वाभाविक है ।

बालों को सफेद होने से रोकना संभव नहीं है । लेकिन मैंने बंगालियों में देखा है कि अस्सी-अस्सी वर्ष के लोगों के बाल कम सफेद हुए होते हैं, इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे वो मछली का ज्यादा सेवन करते हैं, वह भी सरसों के तेल में पका कर । सरसों या नारियल तेल का ही बालों में उपयोग करते हैं । अपना वजन नियंत्रित रखते है, बढ़ने नहीं देते । चिन्ताओं से मुक्ति भी बालों को सफेद होने से रोकती है । बालों में डाई (रंगना) लगाना बन्द कर दें । "grow old gracefully" को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। सफेद बाल जीवन की परिपक्व अवस्था की निशानी है, सफेद होते हैं तो होने दें । कहते हैं त्रिफला के सेवन से एवं त्रिफला के पानी से बालों को धोने से सफेद तो काले नहीं होंगे लेकिन अन्य बालों के सफेद होने की प्रक्रिया शिथिल हो जायेगी ।

याददाश्त का कमजोर होना भी स्वाभाविक है । इससे बचने का एकमात्र तरीका है कि आप कार्य में जितने आधिक व्यस्त रहेंगे उतनी ही आपकी याददाश्त ठीक बनी रहेगी । बेकार बैठकर शरीर को शिथिल होने से बचावें । शिथिल शरीर में जैसे अन्य अंग कमजोर होने लगते हैं, उसी तरह याददाश्त भी कमजोर होने लगती है । कभी-कभी तो अत्यन्त निकट के आदमी का नाम भूल जाता है । इससे परेशान न हों । केवल अपने को शिथिल होने से बचाएँ । याददाश्त की कमी आपको परेशान नहीं करेगी ।

दिल की बीमारी भी बढ़ी उम्र में परेशान करती है । इस बीमारी का मुख्य कारण है रक्त के संचालन का कोलेस्ट्रोल बढ़ने से बचने के लिए तेज चाल से प्रातः भ्रमण, योग एवं खान-पान का नियंत्रण आवश्यक है । तेज चाल से प्रातःभ्रमण आपके खून के दौरे को तेज कर देगा, ताकि नसों में जमे कोलेस्ट्रोल को धकेल कर बाहर कर देगा । दिल की बीमारी बढ़ जाने पर योग्य चिकित्सक से परामर्श करें । आवश्यक होने पर बाईपास सर्जरी करा लें । लेकिन एक बार सर्जरी होने पर सावधानीपूर्वक जीवन व्यतीत करें वरना पुनः बाईपास कराना पड़ेगा । आजीवन बाईपास से बचा जा सकता है, बशर्ते कि आपकी दिनचर्या नियंत्रित रहे । स्वभाव का चिड़चिड़ा होना दो कारण से होता है । एक तो मनचाहा न कर पाने के कारण, दूसरा वृद्ध जब छोटों के कर्तव्य को अपना अधिकार मान लेता है और अधिकार के अनुसार सम्मान नहीं हो पाता, तो स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है । अतः सर्वप्रथम छोटों के कर्तव्य को अपना अधिकार मानना बन्द करें और तनावमुक्त जीवन जीने का अभ्यास करें । सारे रोगों का मूल कारण आपका तनाव है । जो होता है उसे स्वाभाविक ढंग से होने दें । बाहर की किसी भी प्रकार की क्रिया को अपने चिंतित होने का कारण न होने दें ।

वृद्धावस्था में एक चीज और देखने को मिली कि वृद्ध अपने अनुभव या उपलब्धि को किसी को सुनाना

चाहता है, लेकिन उसे कोई श्रोता नहीं मिलता । वह आपको अगाह एवं सावधान करना चाहता है, ताकि आप संभावित खतरे से बचें, लेकिन जब उसे सुनने वाला नहीं मिलता तो भीतर-भीतर कुढ़न होती है, जो उसके स्वस्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है । अतः परिजनों को, मित्रों को अवसर देना चाहिए, ताकि वृद्ध आपनी बात कह सके। योग्य पात्र को सुनाने के बाद वृद्ध बहुत संतुष्ट एवं हल्कापन महसूस करेगा । यह जरूर है कि किसी अनुभव को कई बार सुनाने के कारण कोई सुनना नहीं चाहता, अतः श्रोता को धीरज रखना चाहिए ।

इस लेख का उद्देश्य वृद्धों की सभी प्रकार की बीमारियों का उल्लेख करना नहीं है । मैं वृद्धों को संदेश देना चाहता हूँ कि सुखमय बुढ़ापा के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि अपने स्वास्थ्य को ठीक रखें । अपने शरीर को इतना कमजोर न बना लें कि हर काम के लिए दूसरों का सहयोग लेना पड़े । अपने काम को स्वयं करने का संकल्प लें । यह कैसे संभव होगा ?केवल दिनचर्या को नियमित रखें । निश्चित समय पर उठना एवं सोना । सारे दिन का कार्य विभाजन कर लेना । खाने-पीने में पूरी सावधानी रखना ताकि पेट ठीक रहे एवं शरीर में स्फूर्ति रहे । कम खाना एवं मिर्च-मसालों का ज्यादा सेवन न करें । अगर सादा भोजन बिना मिर्च-मसालों के कर सकें तो अति उत्तम । पानी का सेवन अधिक से अधिक करें । उत्तेजना याने क्रोध, गुस्सा से बिल्कुल परहेज करें । क्रोध से शरीर की शक्ति का भी क्षय होता है । वृद्धावस्था में शक्ति के क्षय को रोकें । यह मान कर चलें कि जीवन जीने के लिए है, ढोने के लिए नहीं । मरना तो निश्चित है लेकिन मरने का भय किस बात का ! संकल्प लें कि मैं चल के चित्ता पर जाऊँगा याने चलते-फिरते मरूँगा । न तो स्वयं बिस्तर पर सड़ूंगा और न कष्ट पाऊँगा और न परिवार के अन्य लोगों को कष्ट दूंगा । अपनी नियमित दिनचर्या में प्रातः भ्रमण एवं योग के लिए कम से कम दो घंटे का समय दें, योग किसी योगाभ्यासी से सीख लें जो आपके शरीर की बीमारियों को दूर करें या उन्हें नियंत्रण में रखें । न किसी की अनावश्यक आलोचना करें, न किसी का बुरा सोचें । आध्यात्मिक पुस्तकों जैसे गीता, रामायण, भागवत आदि पुस्तकों का नित्य पारायण करें, ताकि जीवन में शान्ति रहे एवं विचारों में सन्तोष आ जाय । ★

वृद्ध

वो वृद्ध मेरे रिश्ते में तो नहीं पड़ोसी जरूर थे,
अपने जमाने में अच्छे खासे मशहूर थे,
उन्होंने मानो कोई पाप ही किया था,
एक ही नहीं दो बेटों को जन्म दिया था ।
एक सरकारी अफसर दूसरे की निजी कंपनी थी,
दोंनो में से किसी को कोई नहीं कमी थी,
सपत्ति, खुद के मकान थे,
लेकिन उनके लिये पिता गैरजरूरी सामान थे,
पोतियों को दादा आधुनिकता में खलल लगते थे,
बेटों के घर उनका अलग कमरा बना था,
ड्राईंग रूम में बैठना उनके लिये मना था ।
अपने दुख उन्हें खुद ही सहना था,
बारी-बारी से बेटों के घर पर रहना था ।
जिसके घर मे रहते उसके ढंग से चलना था,
सारे रिश्ते टूटे जो आज तक निभाए थे,
मेरी तरफ उनका कुछ खास झुकाव था,
मेरा भी उनसे बहुत लगाव था ।
मैंने कहा था,
आप इतना अपमान क्यूँ सहते है ?
पुश्तैनी मकान में क्यूँ नही रहते हो ?
निरी भावनाओं में ओर मत बहिए ।
अपने स्वाभिमान मर्जी से रहिए ।
वे बोले -
हमारा क्या है थोड़ा और सह लेंगे
बाद में बेटे कम से कम ये तो नहीं कहेंगे,
बाबूजी खुद तो अपना अच्छा नाम कर गए
और जाते जाते हमको बदनाम कर गए,
उनकी ये बातें मेरे लिए सबक थी,
उन्हें मान नहीं मिलने की मन में कसक थी ।
दुनियां का हर पिता अपने फर्ज इसी तरह निभाता है ।
बच्चे पिता की चिंता करे न करे,
वो आखिरी दम तक बच्चों की भलाई चाहता है ।
आज उनकी मौत पर मैंने भी दुख जताया,
पर सच मानिये मेरे मन ने खुशी का जश्न मनाया !
मुझे लगा जैसे उनकी किस्मत खुल गई,
और उन्हें इस जीवन से मुक्ति मिल गई !
रोज उनके मरने की कामना जो कर रहे थे,
जमाने के सामने फूट-फूट कर खूब रो रहे थे ।

-रचना बजाज, मध्यप्रदेश
(वर्डप्रेस.कॉम से साभार)

असम : मारवाड़ी सम्मेलन का नरसंहार प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

बायीं से बैठे हुये-मदनगोपाल भड़ेच, मांगीलाल चौधरी, विजय कुमार मंगलूनिया, राजकुमार सेठी, डॉ. शिवभगवान अग्रवाल । बायें से खड़े-सीताराम अग्रवाल, कन्हैयालाल स्वामीस सुरेश स्वामी, सीए गोपाल अग्रवाल

दिनांक २३ अगस्त को पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से प्रादेशिक अध्यक्ष विजय कुमार मंगलूनिया के नेतृत्व में हाल ही में बोकाखात के समीप डालामारा में हुए हिंदीभाषियों के नरसंहार से प्रभावित सापजुडी स्थित शिविर का दौरा किया । इस दल के सदस्यों ने शिविर में रह रहे लोगों से मुलाकात की एवं घटना की विस्तृत जानकारी ली। सम्मेलनाध्यक्ष मंगलूनियाजी ने सभी शरणार्थियों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया एवं सम्मेलन की ओर से कुछ खाद्य सामग्री भेंट की ।

तत्पश्चात यह दल रंगबंगघाट में हुए हिन्दीभाषियों के नरसंहार से प्रभावित लोगों से मिलने लवनघाट पहुँचा । लवनघाट में इस दल ने नंदलाल स्वामी एवं महावीर स्वामी के परिजनों से मुलाकात कर संवेदना प्रकट की । स्वामी परिवार के सुरेश स्वामी एवं घटना के दौरान अपने हाथ खुला कर, वहाँ से छुपते हुए भाग कर, अपनी जान बचाने वाले कन्हैयालाल स्वामी ने घटना की पूरी जानकारी दी एवं परिवार की सुरक्षा हेतु प्रशासन से मांग करने हेतु अनुरोध किया ।

इस दल में सलाहकार समिति के सदस्य तथा रहा शाखा के अध्यक्ष मांगीलाल चौधरी, छापरमुख शाखा के अध्यक्ष सीताराम अग्रवाल, नगाँव शाखा सदस्य मदनगोपाल भड़ेच, जोरहाट शाखा उपाध्यक्ष जा० शिवभगवान अग्रवाल, जोरहाट शाखा मंत्री राजकुमार सेठी एवं नवयुवक मंडल, जोरहाट के सचिव सीए गोपाल अग्रवाल थे । सम्मेलन ने राज्य सरकार से इन घटनाओं में प्रभावित सभी हिन्दीभाषी परिवारों की पूर्ण सुरक्षा की मांग की है। ★

कन्हैयालाल सेठिया समग्र-४ (अनुवाद खंड) का लोकार्पण

कोलकाता २५, सितम्ब २००७ । ''युग कवि कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य का फलक इतना विराट है कि कोई भी विशेषण, कोई भी स्तुति श्लोक इतना सक्षम नहीं है जो उनके साहित्य की विविधता एवं गंभीरता को पूरी तरह अभिव्यक्त कर सके ।'' ये उद्‌गार हैं वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार डॉ० अरुण प्रकाश अवस्थी के जो उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया समग्र-४ (अनुवाद खंड) के लोकार्पण पर ओसवाल भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रधान वक्ता के रुप में बोलते हुए व्यक्त किये। आठ सौ पृष्ठों के इस वृहत ग्रंथ का सम्पादन श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने एवं सह-सम्पादन श्री महावीर जी बजाज ने किया । इसका प्रकाशन राजस्थान परिषद ने किया । इससे पूर्व श्री सेठिया का राजस्थानी समग्र एवं हिन्दी समग्र-१ तथा हिन्दी समग्र,-२ प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रधान अतिथि प्रज्ञा भारती डॉ० वासुदेव पोद्दार ने कहा कि सेठिय जी का साहित्य सच्चे अर्थों में लोक जीवन एवं लोक कल्याण से गहरा जुड़ा हुआ है । इसी कारण राजस्थान के गाँव-गाँव एवं ढाणी-ढाणी (छोटी बस्तियों) तक में वह गाया जाता है । इसे अनुवाद के माध्यम से पूरे देश एवं विदेश में भी पहुँचाने की जरूरत है।

ग्रन्थ सम्पादक श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने कहा कि श्री सेठिया ने अपनी रचनाओं में जीवन के हर पक्ष को छुआ है । संस्कृति, दर्शन, राष्ट्रभक्ति, पर्यावरण एवं दलितों-वंचितों के प्रति आत्मीय संवेदना के साथ-साथ रूढियों पर भी गहरा प्रहार किया है । ★

जरूरतमंदों को बांटे गए कृत्रिम पांव

जिनके पैर नहीं थे, वे दौड़ने लगे-नाचने लगे । कुछ ऐसा ही नजारा दिखा रविवार को इकबालपुर स्थित महावीर सेवा सदन में आयोजित कृत्रिम पांव वितरण शिविर के मौके पर।

शिविर का आयोजन महावीर सेवा सदन, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन और कलकत्ता मारवाड़ी महिला शाखा ने किया, जिसमें २५ जरूरतमंदों को निःशुल्क कृत्रिम पांव बांटे गए । शिविर के उद्घाटनकर्ता थे कोलकाता नगर निगम के मेयर इन काउंसिल फैयाज अहमद खान । अपने भाषण में उन्होंने सेवाकार्यों में जुटी संस्थाओं की भूमिका को सराहते हुए समाज से नारी निर्यातन जैसी कूरीतियों पर भी प्रहार करने का आह्वान किया ।

विशिष्ट अतिथि उद्योगपति राम अवतार गुप्ता ने सेवा कार्यों की महत्ता पर प्रकाश डाला । महावीर सेवा सदन के अध्यक्ष जेएस मेहता ने संस्था के कामकाज का ब्यौरा दिया और बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों के अलावा नेपाल और मलेशिया में भी ऐसे शिविर लगाए जा चुके हैं । अब दक्षिण अफ्रीका में शिविर की तैयारी चल रही है । सेवा सदन के उपाध्यक्ष जेएम सेठिया ने कृत्रिम अंग निर्माण की प्रक्रिया और उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाओं के बारे में बताया । कार्यक्रम का संचालन श्री रतन शाह ने किया ।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष लोकनाथ डोकानियां और नवनिर्वाचित अध्यक्ष विश्वनाथ सुल्तानियां ने सेवा कार्यों के लिए समाज से बढ़-चढ़कर भागीदारी बनाए रखने की अपील की । कलकत्ता मारवाड़ी महिला शाखा की सचिव उर्मिला खेतान और अ.भा.मा.म.सं की उपाध्यक्ष विमला डोकानियां ने महिलाओं की भागीदारी पर प्रकाश डाला । ★

छत्तीसगढ़ : महिला उद्यमी दल

प्रदेश में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए राज्य में पृथक से महिला औद्योगिक प्रक्षेत्र की स्थापना का प्रयास किया जा रहा है, इसी कड़ी में उद्योग राज्य मंत्री श्री राजेश मूणत की विशेष पहल पर प्रदेश से एक महिला उद्यमी दल को हैदराबाद में एसोसिएशन ऑफ लेडी इंटरप्रेन्यूर्स ऑफ आंध्रप्रदेश द्वारा स्थापित एवं संचालित विशेष महिला औद्योगिक क्षेत्र का अध्ययन करने भेजा जा रहा है, यह दल वहां एसोसिएशन द्वारा महिला उद्यमिता पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी भाग लेगा, इस महिला उद्यमी दल में बारह सदस्य है, जिनमें प्रज्ञा राठी, हर्षा शाह, प्रभा भंडारी, किरण रतोड़िया, प्रीति खासगीवाल, रजनी धरड़े, ममता अग्रवाल सभी रायपुर से, रूपा मूंदड़ा जोंगरगढ़, स्वीटा बलौदा बाजार, इंदू गोलछा बिलासपुर, हेमलता साहू बिलासपुर, एवं श्रीमती खेब्रागढ़े शामिल हैं, इस दल के साथ साथ उद्योग विभाग की प्रबंधक मंजू जैन तथा सहायक प्रबंधक ललित शुक्ला और विवेक कायंदे जा रहे है।

.....

नाजनीन अहमद को स्व. राधादेवी खंडेलिया स्मृति पुरस्कार प्रदान

शिवसागर : श्री मारवाड़ी पंचायत जन दातव्य समिति शिवसागर द्वारा शिवसागर के मिलन मंदिर प्रांगण में आयोजित स्वर्गीय राधादेवी खंडेलिया स्मृति पुरस्कार वितरण समारोह में असम उच्च माध्यामिक शिक्षांत परीक्षा २००७ में अखिल असम स्तर पर ८ वां स्थान प्राप्त करनेवाली मेधावी छात्रा नाजनीन अहमेद को पुरस्कृत किया गया । मालुम हो कि गत वर्ष ३० मई २००६ को श्री मारवाड़ी पंचायत के सदस्य प्रदीप खंडेलिया ने शिक्षा जगत के विकास एवं छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना को जागृत करने के लिए घोषणा की थी कि अपनी माता स्व. राधादेवी खंडेलिया की स्मृति में वे उच्च माध्यमिक विद्यालन शिक्षांत परीक्षा में राज्य में टॉप- १० में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पुरस्कृत करेगें।

युगपथ चरण

श्री हनुमान सरावगी अमृतोत्सव

अमृतोत्सव के अवसर पर बायें से श्री सुबोध कांत सहाय, श्री हनुमान सरावगी, झारखण्ड के राज्यपाल महामहिम श्री सैय्यद सिब्ते रजी, श्रीमती चाँद फरहाना एवं श्रीमती रेणुका सरावगी

झारखण्ड के सुविख्यात समाजसेवी उद्योगपति, चिंतक श्री हनुमान प्रसाद सरावगी ने २५सितंबर को २५ वर्ष पूरे किये । इस अवसर पर अमृतोत्सव पर्व के अद्घाटन समारोह में 'अमृतोत्सव प्रणति' ग्रंथ का लोकार्पण महामहिम श्री सैयद सिब्ते रजी राज्यपाल झारखण्ड ने किया ।

अमृतोत्सव पर्व में सर्वधर्म प्रार्थना भी की गयी । अमृतोत्सव का संचालन भी.भाष्कर राव ने किया । रज्यसभा सदस्य श्री अजय मारू, साहित्यकार डा० ऋता शुक्ल ने भी अपने विचार रखे । अमृतोत्सव में श्रीमती चांद फरहाना, राज्यसभा सांसद देवदास आप्टे, मंत्री एनोस एक्का, पूर्व सांसद रामटहल चौधरी, ब्रिगेडियर रवि कुमार, आर०के० कटारिया, डा० एके पांडेय, कैबिनेट सचिव एन० एन० पांडेय सहित देश के विभिन्न राज्यों से आये अतिथि बड़ी संख्या में शामिल थे । सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक संख्याओं के प्रतिनिधियों ने शाल, स्मृति चिन्ह और फूल-माला भेंट कर श्री सरावगी का अभिनन्दन किया । समारोह में श्री हनुमान सरावगी की धर्मपत्नी श्रीमती रेणुका सरावगी, विनय सरावगी, विजय सरावगी सहित परिवार के अन्य सदस्य शामिल हुये ।

.....

श्री रामकृष्ण जनकाल्याण समिति

सप्तम वर्ष के सेवा कार्यों का विवरण वर्ष २००७

श्री रामकृष्ण जनकल्याण समिति ने सप्तम वर्ष में अपनी सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र का काफी विस्तार किया है जो सेवा कार्य किये उनमें प्रमुख हैं नेत्र परिक्षण, चश्मा वितरण एवम् होमीयोपेथिक सेवा कार्य, सहायता शिविर, अनाथालय, वृद्धाश्रम, छात्रावास, ऐम्बुलेन्स सेवाकार्य आदि ।

आदर्श-उदाहरण

१८ दिसम्बर' ९३ को पूर्णिया जिला (बिहार) के बिरौली बाजार में श्री प्रदीप डोकानिया की कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा हत्या कर दी गई थी । विवाह के २ वर्ष बाद ही इस तरह की मृत्यु एक खौफनाक हादसा थी । महिला सम्मेलन की श्रीमती विमला डोकानिया एवं श्री लोकनाथ डोकानिया ने अपने बड़े भाई श्री भोलाराम डोकानिया से, जो स्व. प्रदीप के पिता हैं, विमर्श करके एक आदर्श कार्य किया, श्री भोलाराम जी ने अपने छोटे बेटे चि. संदीप का विवाह, स्व. प्रदीप की पत्नी, सौ. का. शशिबाला के साथ दि.२६ अप्रैल, १९९९ को गुलाब बाग (बिहार) में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न कर-समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

नोट : क्या आपके नजर में भी आदर्श प्रस्तुत करने का कोई उदाहरण है? कृपया हमें उसकी जानकारी दें। उनके विवरण को सचित्र प्रकाशित किया जायेगा ।

- सम्पादक

बधाई

पत्रकार एवं राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री जुगल प्रजापति को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पिछडा वर्ग विभाग का प्रदेश संयोजक नियुक्त किया गया है । ★

छिंदवाड़ा / कु. श्वेता काबरा सुपुत्री श्री महेश किरण काबरा (छिंदवाड़ा) ने आर.टी.एम. नागपुर यूनिवर्सिटी से एमएससी. होम साइंस डिपार्टमेंट के रिसोर्स मैनेजमेंट ब्रांच के प्रथम वर्ष में 80% अंक प्राप्त कर ब्रांच एवं विश्वविद्यलाय में प्रथम स्थान प्राप्त की।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 29, October 2007
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

...ync with Nature...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exporters
(A Pioneer House for Minerals)

* IRON ORE - BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES
* MANGANESE ORE - BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES
* LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE

:: CORPORATE OFFICE ::
RUNGTA HOUSE, CHAIBASA-833201, JHARKHAND
Phone : 06582-256561/256761/25661 Fax : 91-6582-256442
Email : rungtas@satyam.net.in, Web Site : www.rungtamines.com; GRAM : "RUNGTA"

:: CENTRAL MINES OFFICE ::
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST.-KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : 06767-275221/277481/441; Fax : 91-6767-276161; GRAM : 'RUNGTA"

:: REGISTERED OFFICE ::
8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA-700017, INDIA
Phone : 033-2281 6580/3751; Fax : 91-33-2281 5380; Email : rungta_cal@sify.com

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com